इमाम और इमामत

हुसैनियत दर्दे दिल का इलाज है। हुसैनियत हिम्मत-ओ-हौसला है उन अफ़राद के लिए जिनसे उनके हुक़ूक़ छीन लिए गए हैं। हुसैनियत जुरअत-ओ-शुजाअत है उन लोगों से मुक़ाबेले के लिए जो माल-ओ-ज़र और ज़ुल्म-ओ-जौर के ज़रीए कमज़ोर और ज़ईफ़ को पस्पाई की तरफ़ ढकेल रहे हैं। हुसैनियत एक मिशन है जो आलम में फैली हुई बेशुमार ज़ेह्नी, फ़िक्री, शऊरी, इक़्तेसादी और मआशरती बेशुमार उल्झी हुई बीमारियों के लिए हेफ़ाज़त और मसूनियत की दीवार है जिसे कोई तोड़ नहीं सकता। ग़र्ज़ कि इस्लाम की २३ साला रिसालत का ख़ुलासा किताबे कर्बला है।

मक्का-ए-मुकर्रमा, मदीना-ए-मुनव्वरा, नजफ़े अशरफ़, कर्बला-ए-मुअल्ला, मशहदे मुक़द्दस, काज़मैन शरीफ़, सामर्रा ये वोह मन्ज़िलें है जहाँ तब्लीग़े रिसालत के तारीख़ी क़ाफ़ेले ने ठहर कर अपने सफ़र के संगे मील क़ाएम किए और यहीं से एक मिनारा नूरे हिदायत का तामीर करके सारी दुनिया को सुल्ह-ओ-आश्ती का पैग़ाम दिया। इन मक़ामात में कर्बला एक ऐसा मर्कज़ क़रार पाया जहाँ से पता चलता है कि येह अहमदे मुरसल सल्लल्लाहो अलैह व आलेही व सल्लम की दुआ है जो बारगाहे ख़ुदावन्दी में हमेशा की तरह लब्बैक से नवाज़ी गई। येह वोह सर ज़मीन है जहाँ तस्लीम-ओ-रज़ा की वोह किताब लिखी गई जो रम्ज़े क़ुरआनी का दर्स दे रही है जिसके लिए इक़बाल ने कहा था: 'रम्ज़े क़ुरआन अज़ हुसैन आमोख़्तीम'।

जिस इस्लाम ने रिसालत मआब मुहम्मदे अरबी सल्लाल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की बेअसत पर रोज़े अव्वल पहला क़दम फ़लाह की बुनियाद पर रखकर दुनिया भरके लोगों को सलामती का पैग़ाम दिया था और जब कर्बला में वोह हुसैन जिसके लिए रसूले अकरम सल्लाल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने फ़र्माया था, **''येह हुसैन मुझसे है और मैं हुसैन से हूँ।''** और आपने (अलैहिस्सलाम) येह सच कर दिखाया था जिसे शाएर ने बड़े अच्छे अन्दाज़ में कहा है:

डूब कर पार हो गया इस्लाम
आप क्या जानें कर्बला क्या है

तो इसी इस्लाम को नाम नेहाद इस्लाम के नाम पर हुकूमत करने वालों ने अपनी उस ताक़त पर जिसके ज़रीए वोह हुकूमत करते थे एक कारी ज़र्ब जानकर हुसैनियत पर पर्दा डालने के लिए सियासत गरी, बातिल तब्लीग़ात, ज़र ख़रीद उलमा, बड़े बड़े फ़ितना परवर और दुनिया परस्त दिमाग़ों में जाह-ओ-माल का हिर्स पैदा करके तमाम कोशिशें जितनी मुमकिन हो सकती थीं कर डालीं जिसके नतीजे में इस्लाम में मालूम नहीं कितनी डेढ़ ईंट की मसजिदें तैयार हो गईं और इस तरह इस्लाम फ़िरक़ों में बँट गया।

मेलले आलम को अम्न का पैग़ाम, सुल्ह-ओ-आश्ती की ज़िन्दगी बसर करने का सबक़, सर उठाकर और क़दम जमाकर जीने का सलीक़ा देने वाले वारिसे अम्बिया-ओ-मुरसलीन हुसैन अलैहिस्सलाम थे। आप (अलैहिस्सलाम) को माँ ने चक्की पीसकर पाला और मसाएब, जो दिन की रोशनी को सियाह रात में बदल देने वाले थे, सब को सब्र और शुक्रे इलाही के साथ उठा लिए। लेकिन बाबा की वसीयत के मुताबिक़ और अपने नूरानी किरदार और मासूम सीरत के तक़ाज़े की बेना पर उम्मते मुस्लेमा और दीने हनीफ़ के नाम लेने वालों को बद दुआ न देकर कुफ़राने नेअमत करने वालों को अज़ाबे शदीद से बचा लिया।

बाकी सफह न. ३०

अज़ादारी और क़ुरआन

जदीद तालीम और अस्त्रे (अस्रे) हाज़िर की रोशन फ़िक्री ने जहाँ साइंस और दीगर मैंदानों में तरक़्क़ी की है और इन्सान को नई फ़ज़ाओं से आश्ना किया है वहीं माद्दीयत में इस क़द्र गिरफ़्तार होने के असबाब भी पैदा होते हैं कि हर वोह चीज़ जिसमें बज़ाहिर कोई माद्दी फ़ाएदा और वोह भी नक़्द फ़ाएदा नज़र न आता हो उस पर यही रोशन फ़िक्री तरह तरह से सवाल ईजाद करती है और उसकी अफ़ादियत से इन्कार करती है।

इस तरह के तालीमी माहौल में परवरिश याफ़्ता अफ़राद येह सवाल करते हैं कर्बला का वाक़ेआ जो आज से १३६६ साल क़ब्ल पेश आया था उसको बार बार दोहराने से क्या फ़ाएदा। एक पूरी क़ौम को अज़ादारी में मशग़ूल कर देने से क्या हासिल। इसी तरह और भी सवालात हैं जो मुख़्तलिफ़ लब-ओ-लहजे में बयान हो रहे हैं।

हम मुसलमान हैं। क़ुरआने करीम की आयतें, रसूल और आले-रसूल अलैहिमुस्सलाम की रवायतें हमारे लिए मशअले राह हैं। हमें सिर्फ़ येह देखना है कि हमारा येह अमल यानी हमारी अज़ादारी, क़ुरआन और हदीस की रोशनी में कैसा है। एक मोमिन की ज़िन्दगी का मक़सद ख़ुदा और उसके रसूल की ख़ुशनूदी है। जो क़ुरआने करीम की हेदायतों से ही नसीब हो सकती है लेहाज़ा हम ज़ैल में क़ुरआने करीम की रोशनी में चन्द बातें पेश करते हैं।

१. अज़ादारी फ़ितरी असर है

क़ुरआने करीम ने फ़िरऔन की दास्तान बयान करते हुए फ़र्माया:

फ़मा बकत अलैहिमुस्समाओ वल अर्ज़
उन पर न आसमान ने आँसू बहाए और न ज़मीन ने।

(सूरए दुख़ानः २९)

इस से अन्दाज़ा होता है कि आसमान और

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

सीरियल नम्बर	मज़मून	सफ़हा नम्बर
१.	इमाम और इमामत	१
२.	अज़ादारी और क़ुरआन	२
३.	इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का इनक़िलाब और उस ज़माने के जवानों के हालात	१०
४.	अज़ादारी.... फ़र्शे ज़मीं से अर्शे बरीं तक मुसीबते सैयदुश्शोहदा के असरात	१३
५.	ज़ियारते नाहिया - एक मुख़्तसर वज़ाहत	२०
६.	वाक़ए करबला - आईनए हक़-ओ-बातिल	२४

ज़मीन आँसू बहाते हैं। अगर आसमान और ज़मीन आँसू न बहाते होते तो इस जुम्ले का कोई मफ़हूम नहीं था।

तारीख़ के औराक़ इस बात के गवाह हैं जब हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम शहीद किए गए तो आसमान से ख़ून की बारिश हुई। दीवारों पर ख़ून नज़र आया। पत्थरों के नीचे से ख़ून उबला और मुद्दतों तक येह सिलसिला जारी रहा। (तफ़सील के लिए मुलाहेज़ा हो इब्ने असाकिर की तारीख़े दमिश्क़, जिल्द १४, सफ़हा २२० से २२४)

''दि ऐंग्लो सैक्सन क्रोनिकिल'' येह किताब एक ईसाई ने सन् १९५४ में लिखी है। इस किताब में मुअल्लिफ़ ने उन वाक़ेआत का तज़केरा किया है जो जनाब ईसा के बाद बरतानिया (ब्रिटेन) के लोगों पर गुज़रे हैं। इस किताब में सन् ६८५ ई. के वाक़ेआत में लिखा है (सन् ६८५ ई. सन् ६१ हि. के बराबर है)।

''इस साल आसमान से ख़ून की बारिश हुई और बरतानिया में लोगों के दूध और मक्खन ख़ून में तबदील हो गए।''

(सफ़हा ३५, ३८ से ४२)

मुअल्लिफ़े किताब चूँकि वाक़ए कर्बला और उसके असरात से वाक़िफ़ न था इसलिए उन वाक़ेआत की तफ़सीर न कर सका। इस वाक़ए से बाक़ाएदा वाज़ेह होता है कि हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की बशारत का असर अरबी दुनिया में महदूद न था बल्कि उसका असर पूरी काएनात पर था। और होना भी चाहिए क्योंकि इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम काएनात के इमाम हैं।

२. अज़ादारी तक़ाज़ाए मवद्दत

क़ुरआने करीम ने अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम की मवद्दत-ओ-मुहब्बत को अज्रे रिसालत क़रार दिया है। इस मवद्दत-ओ-मुहब्बत को तमाम मुसलमानों पर वाजिब क़रार दिया है।

ज़ालेकल्लज़ी योबश्शिरुल्लाहो एबादहुल्लज़ीना आमनू व अमेलुस्सालेहात क़ुल ला असअलोकुम अलैहे अज्रन इल्लल मवद्दता फ़िल क़ुर्बा व मँय्यक़तरिफ़ हसनतन नज़िद लहू फ़ीहा हुस्ना इन्नल्लाहा ग़फ़ूरुन शकूर

(सूरए शूराः २३)

यही वोह फ़ज़्ले अज़ीम है जिसकी बशारत ख़ुदा अपने उन बन्दों को देता है जो ईमान लाए और नेक आमाल अंजाम दिए हैं। ऐ पैग़म्बर आप उन लोगों से कह दीजिए मैं तुमसे अपनी तब्लीग़े रिसालत का कोई अज्र नहीं चाहता अलावा इसके कि मेरे रिश्तेदारों से मुहब्बत करो और जो शख़्स कोई नेकी हासिल करेगा हम उसकी नेकी में इज़ाफ़ा कर देंगे। बेशक अल्लाह बहुत ज़्यादा बख़्शने वाला और क़द्रदाँ है।

पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की तमाम तब्लीग़े रिसालत का अज्र अह्लेबैत की मुहब्बत-ओ-मवद्दत है। इस तब्लीग़े रिसालत में तमाम उसूले दीन, फ़ुरुए दीन, अख़लाक़ियात, एबादात, मुआमेलात सब शामिल हैं। यानी जो शख़्स दीने मुक़द्दसे इस्लाम को क़बूल करना चाहता है और उसकी तालीमात पर अमल करना चाहता है उसके लिए वाजिब-ओ-ज़रुरी है कि वोह अपने दिल को अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम की मुहब्बत से आरास्ता और मुनव्वर करे।

क़ुरआने करीम ने मुहब्बत के कुछ असरात बयान किए हैं:

(अ) पैरवी

क़ुल इन कुन्तुम तोहिब्बूनल्लाहा फ़त्तबेऊनी योहबिबकुमुल्लाह

(सूरए आले इमरान : ३१)

आप इन लोगों से कह दीजिए अगर तुम ख़ुदा से मुहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो ख़ुदा तुमसे मुहब्बत करेगा।

यानी मुहब्बत का तक़ाज़ा पैरवी है। अगर मुहब्बत

है तो पैरवी ज़रुर होगी मुहब्बत जिस क़द्र शदीद होगी पैरवी उतना ही ज़्यादा होगी।

(ब) ज़ीनते क़ल्ब

मुहब्बत ज़बानी एक़रार का नाम नहीं है बल्कि मुहब्बत का तअल्लुक़ दिल से है। इस से दिल को आरास्ता किया जाता है।

व लाकिन्नल्लाहा हब्बबा इलैकुमुलईमाना व ज़य्यनहू फ़ी क़ुलूबेकुम व कर्रहा इलैकुमुल कुफ़्रा वल फ़ुसूक़ा वल इसियान

(सूरए हुजरात : ७)

और लेकिन अल्लाह ने तुम्हारे लिए ईमान को महबूब बनाया और उसे तुम्हारे दिलों में आरास्ता किया और तुम्हारे लिए कुफ़्र और फ़िस्क़ और नाफ़रमानी को नापसन्द क़रार दिया।

ख़ुदा जिस से मुहब्बत करता है और जिसको अज़ीज़ रखता है उसको दो चीज़ें अता करता है।

(१) दिल को ईमान से आरास्ता करता है। दिल में ईमान से एक ख़ास लगाव ईजाद करता है। वोही लगाव अहकामे एलाही की पैरवी का सबब क़रार पाता है।

(२) गुनाह, फ़िस्क़ और कुफ़्र को उसके लिए नापसन्दीदा चीज़ क़रार देता है।

यानी मुहब्बते ख़ुदा के दो पहलू हैं एक ईमान से लगाव और दूसरे कुफ़्र-ओ-फ़िस्क़-ओ-इसियान से बेज़ारी।

(ज) ख़ुशी और ग़म में शिरकत

क़ुरआने करीम ने जंगे तबूक का वाक़ेआ बयान करते हुए मुनाफ़ेक़ीन का तज़केरा इस तरह किया है।

(सूरए तौबा : ४७ से ५० तक)

आयत ४७

अगर येह (मुनाफ़ेक़ीन) तुम्हारे साथ निकल भी पड़ते तो तुम्हारी वहशत में इज़ाफ़ा ही करते और तुम्हारे दरमियान फ़ितने की तलाश में घोड़े दौड़ाते फिरते। और तुम में ऐसे लोग भी थे जो इन की सुनने वाले भी थे। और अल्लाह तो ज़ालेमीन को ख़ूब जानने वाला है।

आयत ४८

बेशक इन लोगों ने इससे पहले भी फ़ितने की कोशिश की थी और तुम्हारे उमूर को उलट पलट देना चाहा था। यहाँ तक कि हक़ आ गया और अम्रे ख़ुदा वाज़ेह हो गया अगरचे येह लोग इसे नापसन्द कर रहे थे।

आयत ४९

इन में वोह लोग भी हैं जो कहते हैं कि हम को इजाज़त दे दी जाए और फ़ितना-ओ-आज़माइश में न डाला जाए तो आगाह हो जाओ कि येह वाक़ेअन फ़ितने में घीर चुके हैं और जहन्नम तो काफ़ेरीन को हर तरफ़ से घेरे हुए है।

अब इसके बाद की आयत पर ख़ूब ग़ौर करें और देखें कि मुनाफ़ेक़ीन का मिज़ाज क्या है। जब मुनाफ़ेक़ीन का मिज़ाज मालूम हो जाएगा तो मोमिन की अलामत ख़ुद बख़ुद ज़ाहिर हो जाएगी।

आयत ५०

इन का हाल येह है अगर आप तक कोई नेकी आती है तो इन्हें बुरी लगती है। और अगर कोई मुसीबत आ जाती है तो कहते हैं कि हमने अपना काम पहले ही ठीक कर लिया था और ख़ुश-ओ-ख़ुर्रम वापस चले जाते हैं।

इसी बात को सूरए आले-इमरान की आयत १२० में इस तरह बयान किया है।

इन तम्ससकुम हसनतुन तसू हुम व इन तुसिबकुम सैयेअतुँय्यफ़रहू बेहा व इन तसबेरू व

तन्तकू ला यजुर्रो कुम कैदोहुम शैआ
अगर तुमको (मोमेनीन को) कोई नेकी मिलती है तो इन्हें बुरा लगता है और अगर तुमको कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो इससे ये ख़ुश होते हैं। अगर तुम सब्र करो, और तक़वा एख़्तेयार करोगे तो इनकी साज़िशों से तुम्हें कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा।

इससे साफ़ ज़ाहिर है साहेबान ईमान की मुसीबत पर ख़ुश होना और इनकी ख़ुशी से ग़मज़दा होना मुनाफ़ेक़त की अलामत है। इससे वाज़ेह है कि मोमेनीन की मुसीबत में ग़मज़दा होना और इनकी ख़ुशी में ख़ुश होना ईमान का तक़ाज़ा है।

अज़ादारिए सैयदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की मुसीबत में अपने ग़म का अमली इज़हार है। जिसके दिल मे अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम की मुहब्बत है वोह जब भी इनके मसाएब सुनेगा, पढ़ेगा ज़रूर बिज़्ज़रूर ग़मज़दा होगा।

रवायत में है:

रहेमल्लाहो शीअतना ख़ोलेक़ू मिन फ़ाज़ेले तीनतेना व अजेनू बे माए वेलायतेना यहज़ोनूना ले हुज़्नेना व यफ़रहूना लेफ़रेहना

हमारे शीआ हमारी फ़ाज़िल तीनत से पैदा किए गए हैं। हमारी वेलायत-ओ-मुहब्बत से इनका ख़मीर तैयार किया गया है। येह हमारी ख़ुशी में ख़ुश और हमारे ग़म में ग़मज़दा होते हैं।

(शजरए तूबा अज़ मुहम्मद महदी अल-हाएरी, जिल्द १, सफ़हा ३)

३. मज़लूमाने नजरान

अज़ादारी यानी अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम पर जो मज़ालिम-ओ-मसाएब के पहाड़ ढाए गए हैं उनका तज़केरा और उन लोगों का तज़केरा जिन्होंने ये मज़ालिम और मसाएब ढाए हैं। क़ुरआने करीम ने इन साहेबाने ईमान-ओ-अमल के मुतअद्दिद वाक़ेआत बयान किए हैं जिन पर ज़ुल्म ढाया गया है और उनकी शहादत का वाक़ेआ बयान किया है। इससे वाज़ेह होता है कि मज़लूमों के वाक़ेआते शहादत बयान करना क़ुरआनी सुन्नत है। चूँकि ये वाक़ेआत क़ुरआने करीम में मौजूद हैं और क़ुरआने करीम की रोज़ाना तिलावत की ताकीद की गई है लेहाज़ा इस तरह के वाक़ेआत रोज़ाना बयान होंगे और बार बार बयान होंगे। अगर क़ुरआने करीम मोमेनीन पर होने वाले मज़ालिम को बार-बार पढ़ने का हुक्म दे रहा है तो उन लोगों की दास्ताने मज़लूमियत ज़्यादा एहतेमाम-ओ-इन्तेज़ाम से बयान होना चाहिए जो जवानाने जन्नत के सरदार हैं, जिनकी रगों में रसूले गरामिए इस्लाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम का ख़ूने पाक दौड़ रहा है। जिनकी ख़ुशी को रसूलेख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने अपनी ख़ुशी और जिनके ग़म को अपना ग़म कहा है।

जो राज़ इन क़ुरआनी वाक़ेआत को बार बार पढ़ने का है वही राज़ अज़ादारी का है।

जब तक क़ुरआन है उस वक़्त तक ये वाक़ेआत बार बार पढ़े जाते रहेंगे। तो जब तक दुनिया है अज़ादारी बार-बार होती रहेगी।

अगर उन वाक़ेआत की तिलावत सवाब और मग़फ़ेरते गुनाह का सबब है तो अज़ादारिए सैयदुश्शोहदा भी सवाबे अज़ीम और गुनाहों की मग़फ़ेरत का मोअतबर तरीन ज़रीआ है। ज़ैल में सिर्फ़ चन्द क़ुरआनी वाक़ेआत का तज़केरा करते हैं।

सूरए बुरूज में उन साहेबाने ईमान का तज़केरा है जिनको वक़्त के बादशाह ने सिर्फ़ इस जुर्म में ज़िन्दा जला दिया कि वोह अपने ईमान और अक़ीदए तौहीद से दस्त बरदार होने को तैयार नहीं थे। सूरए बुरूज मक्की सूरा है। मक्के में मुसलमानों को तरह तरह की अज़ीयतों का सामना था। जो शख़्स ईमान लाता था उसको कुफ़्फ़ारे मक्का के मज़ालिम का सामना करना पड़ता था। इस सूरे में साहेबाने ईमान के मसाएब का तज़केरा मुसलमानों की हौसला अफ़ज़ाई और ज़ुल्म के मुक़ाबेले में सबाते क़दम का ज़रीआ था। वाक़ेआ बयान करने से पहले चार

क़समें हैं। क़सम के बाद किसी बात का शुरू करना वाक़ए की अहम्मीयत को वाज़ेह करता है। येह एहतेमाम बता रहा है कि मोमेनीन पर होने वाले मसाएब का तज़केरा किस क़द्र अहम है। मुलाहेज़ा फ़रमाएँ, इख़्तेसार के पेशे नज़र सिर्फ़ तरजुमे पर इक्तेफ़ा करते हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

बुर्जों वाले आसमान की क़सम (१)। और उस दिन की क़सम जिसका वअदा किया गया है (२)। और गवाह की क़सम और उसकी क़सम जिसकी गवाही दी गई (३)। असहाबे उख़दूद हलाक कर दिए गए (४)। आग से भरी ख़न्दक़ों वाले (५)। ये आग से भरी शोलावर ख़न्दक़ों पर बैठे रहते थें (६)। और मोमेनीन के साथ जो ज़ुल्म-ओ-सितम हो रहा था उसको ये लोग बड़े इतमीनान से देखा करते थे (७)। इन मोमेनीन का जुर्म बस येह था कि ये ख़ुदावन्द अज़ीज़-ओ-हमीद पर ईमान रखते थे (८)।

वाक़ेआ इस तरह है। यमन में ख़ानदाने हमीर का एक बादशाह था जिसका नाम ज़ूनवास था। उसने यहूदी मज़हब एख़्तेयार किया। हमीर ख़ानदान ने उसकी पैरवी करते हुए यहूदियत को क़ुबूल कर लिया। उसने अपना नाम यूसुफ़ रखा। किसी ने बादशाह को ख़बर दी कि शुमाली यमन में अह्ले नजरान अभी भी अपने पुराने मज़हब यानी ईसाइयत पर बाक़ी हैं। (अलबत्ता इस ईसाइयत से मौजूदा तहरीफ़ शुदा ईसाइयत मुराद नहीं है। बल्कि वोह ईसाइयत मुराद है जो अपनी असली हालत पर बाक़ी थी जिसमें अक़ीदए तौहीद था, तसलीत न थी और येह इस्लाम से पहले का वाक़ेआ है जिस वक़्त येह दीन मन्सूख़ नहीं हुआ था)।

लोगों ने ज़ूनवास को इस बात पर आमादा किया कि अह्ले नजरान को अपना मज़हब छोड़ने और यहूदी मज़हब क़ुबूल करने पर मजबूर करे। इस मक़सद के लिए ज़ूनवास ने नजरान का रुख़ किया। वहाँ के लोगों के सामने अपना मज़हब पेश किया और उसके क़ुबूल करने पर ज़ोर दिया। तमाम ज़ोर-ओ-ज़बरदस्ती के बावजूद वोह लोग अपने मज़हब से दस्तबरदार नहीं हुए और ज़ूनवास के सामने तसलीम नहीं हुए।

ज़ूनवास ने उन मोमेनीन के लिए एक बड़ी ख़न्दक़ खुदवाई और उसमें आग रोशन की। जब ख़न्दक़ में आग के शोले भड़कने लगे तो मोमेनीन को ज़िन्दा उस ख़न्दक़ में डाल दिया और कुछ साहेबाने ईमान को तलवार से टुकड़े टुकड़े कर दिया गया। बीस हज़ार साहेबाने ईमान के साथ येह ज़ुल्म किया गया।

(तफ़सीरे अली इब्ने इब्राहीम क़ुम्मी, जिल्द २, सफ़हा २१४, बहवाला तफ़सीरे नमूना, जिल्द २६, सफ़हा ३३७-३३८)

हज़रत अली इब्ने अबीतालिब अलैहिस्सलाम की रवायत में येह वाक़ेआ इस तरह बयान हुआ है।

ख़ुदा वन्द आलम ने **''हब्शा''** वालों की हेदायत के लिए एक नबी को मबऊस किया। इन लोगों ने नबी की तकज़ीब की। आपस में शदीद जंग हुई। नबी के बाज़ असहाब शहीद कर दिए गए। नबी और बक़िया असहाब असीर कर लिए गए। इसके बाद उन लोगों ने एक ख़न्दक़ खोदी और उसमें आग भर दी।

असीरों को इस ख़न्दक़ के पास लाए और कहने लगे, ''जो लोग हमारे मज़हब पर हैं वोह इस सफ़ से जुदा हो जाएँ और जिनको इनका मज़हब पसंद है और जो इस दीन पर बाक़ी रहना चाहता है वोह ख़ुद को इस आग में ढकेल दे।''

नबी और उनके बावफ़ा असहाब ने जब येह मन्ज़र देखा एक तरफ़ ईमान मगर भड़कते हुए शोले, दूसरी तरफ़ जिन्दगी मगर कुफ़्र। इन लोगों ने ईमान को दुनियवी ज़िन्दगी पर तरजीह दी और मरने के लिए एक दूसरे पर सबक़त हासिल करने लगे। इतने में एक औरत आगे बढ़ी जिसकी आग़ोश में एक महीने का बच्चा था। जिस वक़्त वोह आग की तरफ़ बढ़ने लगी माँ की मुहब्बत ने एक मर्तबा बच्चे को देखा। इस मासूम बच्चे को किस तरह इन भड़कते हुए शोलों के

हवाले कर दे। अभी माँ सोच रही थी कि गोद से बच्चे ने आवाज़ दी।

इन्ना हाज़ा वल्लाहे फ़िल्लाहे क़लील

(माँ डरो नहीं मेरे साथ इस आग में कूद पड़ो)।

येह मुसीबत ख़ुदा की राह में बहुत कम है।

(तफ़सीरे अलमीज़ान, जिल्द २०, सफ़हा ३७७, बहवाला तफ़सीरे नमूना, जिल्द २६, सफ़हा ३४१)

ये रवायतें एक दूसरे के ख़ेलाफ़ नहीं हैं बल्कि उस तरफ़ इशारा कर रही हैं कि इस तरह के वाक़ेआत मुतअद्दिद बार साहेबान ईमान के साथ पेश आए हैं। ज़ालिमों ने उनके ईमान और मुस्तहकम अक़ीदे की बेना पर उन पर ज़ुल्म के पहाड़ तोड़े हैं। कर्बला का वाक़ेआ तो इस वाक़ए से कहीं ज़्यादा दर्दनाक है जो मज़ालिम यज़ीद की फ़ौजों ने हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम और उनके असहाब पर ढाए और ख़ास कर वोह मज़ालिम जो औरतों पर ढाए गए। उन वाक़ेआत का तज़केरा करना ज़्यादा सज़ावार है। इसलिए कि ज़ुल्म की शिद्दत सिर्फ़ ज़ुल्म के मेअयार पर नहीं है बल्कि येह भी देखना चाहिए कि ज़ुल्म किस पर ढाया जा रहा है। हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की अज़मतों को मद्दे नज़र रखते हुए देखा जाए तो जो मज़ालिम उन पर ढाए गए उसकी कोई मिसाल नहीं है। इस बेना पर कर्बला के वाक़ेआत का तज़केरा करना और बार बार तज़केरा करना ख़ुदा की नज़रों में नेहायत ही पसन्दीदा अमल है।

चूँकि आम तौर से क़ुरआन मजीद की तिलावत बस एक ख़ास अन्दाज़ से होती है इस बेना पर क़ारियाने क़ुरआन इस वाक़ए को आम आयतों की तरह पढ़कर गुज़र जाते हैं। अगर क़ारियाने क़ुरआन आयात के मफ़हूम को मद्दे नज़र रखते हुए तिलावत करते और इन आयात को हुज़्न-ओ-ग़म के लहजे में तिलावत करें तो दिल ज़रूर मुतास्सिर होगा।

ज़ालिमों का अन्जाम

ख़ुदा वन्द आलम ने इस सूरे (सूरए बुरूज) में जहाँ मज़लूमों की दास्ताने मज़लूमियत बयान फ़रमाई है वहीं ज़ालिमों का अन्जाम भी बयान किया है। पहले इस बात की तरफ़ इशारा किया गया।

ख़ुदा वोह है जिसके क़ब्ज़े में आसमान और ज़मीन की हुकूमत है और ख़ुदा हर चीज़ पर गवाह है। (९)

इसके बाद इरशाद होता है:

बेशक जिन लोगों ने साहेबाने ईमान मर्दों और साहेबाने ईमान औरतों को सताया और फिर अपने किए हुए पर तौबा नहीं की, उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है और जलने का अज़ाब भी है।(१०)

यानी ज़ालिम इस ख़याल में न रहें कि आज उनके पास हुकूमत और ताक़त है तो उनका जो जी चाहे करें। लेकिन येह एख़्तेयार हमेशा नहीं रहेगा। ख़ुदा की हुकूमत हर एक चीज़ पर है। वोह उनके हर ज़ुल्म पर गवाह है। अगर उन लोगों ने तौबा नहीं की और अपने किए पर शर्मिन्दा नहीं हुए, माफ़ी नहीं माँगी तो उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है। इसके बाद "हरीक़" जलने का तज़केरा इस बात की तरफ़ इशारा है: जिस तरह इन लोगों ने साहेबाने ईमान को भड़कते हुए शोलों में जलाया है, ये भी जहन्नम की भड़कती हुई आग में जलाए जाएँगे। फ़र्क़ येह होगा कि दुनिया में मोमेनीन के ज़ुल्म का दर्द उनकी शहादत के साथ ख़त्म हो गया लेकिन जहन्नम में ज़ालिमों को मौत नहीं आएगी। उनका अज़ाब हमेशा और दाएमी रहेगा।

मज़लूमों का इनआम

ख़ुदा वन्द आलम ने इस सूरे में सिर्फ़ ज़ालिमों के अनजाम का ज़िक्र नहीं फ़र्माया है बल्कि उन इनआमात का भी तज़केरा फ़र्माया है जो ख़ुदा वन्दे ग़फ़ूर-ओ-रहीम की तरफ़ से साहेबाने ईमान के लिए आमादा किया गया है।

"यक़ीनन वोह लोग जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक आमाल अन्जाम दिए उनके लिए ऐसी जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें जारी

होंगी और येह बहुत बड़ी कामियाबी है।''(११)

ख़ुदा वन्द आलम ने न सिर्फ़ जन्नत का तज़केरा किया है बल्कि इसको बहुत बड़ी कामियाबी भी क़रार दिया है। येह है ख़ुदा की राह में मसाएब बर्दाश्त करने का हसीन तर इनआम।

क़ुरआने करीम ने येह वाक़ेआ सिर्फ़ दास्तान के तौर पर बयान नहीं फ़र्माया बल्कि इसका एक मक़सद येह है कि इस वाक़ए को पढ़ने के बाद मज़लूमों से हमदर्दी और ज़ालिमों से नफ़रत पैदा हो।

४. मज़लूमियते जनाब यूसुफ़

ख़ुदा वन्दे आलम ने जनाब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के क़िस्से को ''अहसनुलक़सस'' बेहतरीन क़िस्सा क़रार दिया है और फ़र्माया है:

लक़द काना फ़ी यूसुफ़ा व इख़्वतेही आयातुल्लिस्साएलीन

(सूरए यूसुफ़: ७)

यक़ीनन जनाब यूसुफ़ और उनके भाइयों के वाक़ए में सवाल करने वालों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं।

इब्तेदा में निशानियों (आयात) का तज़केरा किया और इस सूरे की आख़िरी आयत में फ़र्माया:

यक़ीनन उनके वाक़ेआत में साहेबाने अक़्ल के लिए इबरत है और येह कोई ऐसी बात नहीं है जिसे गढ़ दिया जाए। येह क़ुरआन पहले की तमाम किताबों की तसदीक़ करने वाला और इसी में हर चीज़ की तफ़सील है और साहेबाने ईमान क़ौम के लिए हिदायत और रहमत भी है।

(सूरए यूसुफ़ : १११)

इस सूरा में उन मज़ालिम का तज़केरा है जो उनके भाइयों ने जनाब यूसुफ़ पर ढाए थे और उन असबाब का भी तज़केरा है जिसकी बेना पर ये मज़ालिम ढाए गये थे। इस बात का भी तज़केरा है कि ज़ालिम भाइयों की हमेशा कोशिश येह रही कि जनाब यूसुफ़ का ज़िक्र ही न होता कि वोह मज़ालिम भी बयान न हो सकें जो जनाब यूसुफ़ पर ढाए गए थे। इस वक़्त इस सूरे की तफ़सीलात में जाने की गुन्जाइश नहीं है बल्कि येह इशारा करना है कि क़ुरआने करीम ने जनाब यूसुफ़ पर होने वाले मज़ालिम का तज़केरा करके येह वाज़ेह कर दिया कि अम्बिया अलैहिमुस्सलाम पर होने वाले मज़ालिम का तज़केरा करना और बार बार करना क़ुरआनी सुन्नत है। लेहाज़ा जहाँ भी इलाही नुमाइन्दों पर ज़ुल्म हो उसको बयान करना और बार बार बयान करना मुसलमानों की ज़िम्मेदारी है। अब ज़रा इन आयतों पर ग़ौर फ़र्माइए।

जब उन लोगों (भाइयों) ने कहा कि यूसुफ़ और उनके भाई (इब्ने यामीन) हमारे बाप की निगाह में ज़्यादा महबूब हैं हालाँकि हमारी एक बड़ी जमाअत है। यक़ीनन हमारे माँ बाप एक खुली हुई गुमराही में मुबतेला हैं (८)। तुम लोग यूसुफ़ को क़त्ल कर दो या किसी ज़मीन में फेंक दो तो बाप का रुख़ तुम्हारी तरफ़ हो जाएगा और तुम सब उनके बाद सालेह क़ौम बन जाओगे (९)। उनमें से एक शख़्स ने कहा यूसुफ़ को क़त्ल न करो बल्कि किसी अन्धे कुएँ में डाल दो ताकि कोई क़ाफ़ेला उठा ले जाए, अगर तुम कुछ करना ही चाहते हो (१०)। उन लोगों ने याक़ूब से कहा कि क्या बात है कि आप यूसुफ़ के बारे में हम पर भरोसा नहीं करते हालाँकि हम उन पर शफ़क़त करने वाले हैं (११)। कल हमारे साथ भेज दीजिए कुछ खाए पिए और खेले और हम तो उसकी हेफ़ाज़त करने वाले मौजूद हैं (१२)। याक़ूब ने कहा कि मुझे उसका ले जाना तकलीफ़ पहुँचाता है और मैं डरता हूँ कहीं भेड़िया न खा जाए और तुम ग़ाफ़िल ही रह जाओ (१३)। और उन लोगों ने कहा अगर उसे

भेड़िया खा गया और हम सब उसके भाई ही हैं तो हम बड़े ख़सारे वालों में हो जाएँगे (१४)। इसके बाद जब वोह यूसुफ़ को ले गए और येह तै कर लिया कि उन्हें अन्धे कुएँ में डाल दें और हमने यूसुफ़ की तरफ़ वही कर दी कि अनक़रीब तुम उनको इस साज़िश से बाख़बर करोगे और उन्हें ख़याल भी न होगा (१५)।

इसके बाद क़ाफ़ेले के ज़रीए जनाब यूसुफ़ को फ़रोख़्त करने का वाक़ेआ, ज़ुलैख़ा के इल्ज़ामात, क़ैदख़ाना .....

अगर जनाब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का क़िस्सा "अहसनुलक़सस" है तो सैयदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की अज़ादारी "अहसनुलअज़ा" है। इसमें भी निशानियाँ हैं और इबरतें हैं, साहेबाने अक़्ल-ओ-शऊर के लिए। जनाब याकूब अलैहिस्सलाम को जनाब यूसुफ़ की जुदाई का इस क़द्र ग़म था कि जब जनाब यूसुफ़ के भाई सफ़र से वापस आए और जनाब यूसुफ़ की कोई ख़बर न लाए। क़ुरआने करीम ने जनाब याक़ूब की हालत को और उस पर उनके भाइयों के रद्दे अमल को इस तरह बयान फ़र्माया है:

येह कहकर उन्होंने सब से मुँह मोड़ लिया और कहा कि अफ़सोस है यूसुफ़ के हाल पर और इतना रोए कि आँखें सफ़ेद हो गईं और ग़म के घूँट पीते रहे (८४)।

येह था जनाब याक़ूब का तास्सुर कि जनाब यूसुफ़ की मज़लूमियत को, उनकी जुदाई को याद करते जाते थे और रोते जाते थे। येह जितना गिरिया करते थे उतना ही भाइयों का ज़ुल्म आश्कर होता था। और ज़ालिम को हरगिज़ येह पसन्द नहीं है कि कोई उसकी दास्ताने ज़ुल्म बयान करे। लेहाज़ा भाइयों का रद्दे अमल येह था।

उन लोगों (भाइयों) ने कहा आप इसी तरह यूसुफ़ को याद करते रहेंगे यहाँ तक कि बीमार हो जाएँ या हलाक होने वालों में शामिल हो जाएँ (८५)। याक़ूब ने जवाब में कहा: मैं अपने हुज़्न-ओ-ग़म और अपनी बेक़रारी की फ़रियाद अल्लाह की बारगाह में कर रहा हूँ और उसकी तरफ़ से वोह सब जानता हूँ जो तुम नहीं जानते हो (८६)।

यानी किसी की मज़लूमियत पर आह भरना, ख़ुदा की बारगाह में फ़रियाद करना, ख़ुदा की बारगाह में हाज़िर होने का एक ज़रीआ, किसी की मज़लूमियत का तज़केरा करना है। इस बेना पर उलमा-ओ-मुजतहदीन ने इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की अज़ादारी को अफ़ज़ल क़ुरबात क़रार दिया है।

इस वाक़ए से येह भी वाज़ेह हो जाता है किसी की मज़लूमियत पर इतना आँसू बहाना और रोना कि आँखें सफ़ेद हो जाएँ सुन्नते नबी है। इससे अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की मज़लूमियत पर हमें किस क़द्र गिरिया करना चाहिए। मज़लूम पर होने वाले मज़ालिम के सिलसिले में ख़ुदा की बारगाह में फ़रियाद करना भी सुन्नते अम्बिया है।

क़ुरआने करीम में और भी वाक़ेआत हैं (अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के मज़ालिम के वाक़ेआत, हाबील-ओ-क़ाबील का वाक़ेआ, जनाब इब्राहीम अलैहिस्सलाम का आग में डाला जाना, वग़ैरह, वग़ैरह)। इख़्तेसार के पेशे नज़र बस इन्हीं वाक़ेआत पर इकतेफ़ा करते हैं। इन बातों से इस हक़ीक़त का बाक़ाएदा मुशाहेदा हो जाता है कि मज़लूम की मज़लूमियत का तज़केरा एक क़ुरआनी सुन्नत है। चूँकि क़ुरआन हर घर में पढ़ा जाता है इस बेना पर घर घर मज़लूमियत का तज़केरा करना चाहिए। आख़िर में बस येह अर्ज़ करना है कि जो फ़र्क़ जनाब यूसुफ़ और सैयदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के दरजात में है वही फ़र्क़ इन दोनों की मज़लूमियत के तज़केरे में है।

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का इनक़िलाब और उस ज़माने के जवानों के हालात

किसी भी क़ौम-ओ-क़बीले में जवानों को क़ौम का नुमाइन्दा समझा जाता है और कौम की उम्मीदें भी उन्हीं से वाबस्ता होती हैं और वही क़ौम की क़िस्मत रक़म करते हैं। वही क़ौम-ओ-मज़हब का चश्म-ओ-चराग़ और मुस्तक़बिल होते हैं। इसकी बेहतरीन दलील आज के नौजवान और जवान हैं। आज सारी दुनिया में मुत्लक़ुल एनानी का दौर है जो जी में आता है कर गुज़रते हैं। यानी आपनी ख़ाहिशात पर ही अमल करते हैं। आज जवानों का बेहतरीन मशग़ला क़ीमती वक़्त का फ़ुज़ूलियात में बरबाद करना है। इस दौर में मिसाली जवान उस को ख़याल किया जाता है जो कमाई की मशीन और हक़ीर दुनिया के बारे में अलिफ़, बे से वाक़िफ़ हो। आज सारी दुनिया के जवानों की तरजीहात ऐश-ओ-इशरत की ज़िन्दगी और ज़्यादा से ज़्यादा ख़ाहिशों की तकमील है। आज के जवानों के लिए अख़लाक़ी अक़दार, इन्सानी सिफ़ात, मानवीयत और रूहानी सुकून, अल्लाह की क़ुरबत-ओ-इताअत, शआएरे इलाही की ताज़ीम, रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक, बुज़ुर्गों का एहतेराम, वालेदैन की इताअत, क़दामत पसंदी की अलामत समझा जाता है। इन्साफ़ और अक़्ल-ओ-दानिश रखनेवाला इन्सान ऐसे जवान से क्या उम्मीद कर सकता है? क्या वोह कह सकता है कि मुस्तक़बिल में इन्साने कामिल बनाने की ज़िम्मेदारी इस तरह के लोग पूरा कर सकते हैं। और अगर समाज के इरतिक़ा की ज़िम्मेदारी उन्हें दी जाए तो क्या एक फ़ीसद भी वोह अपनी ज़िम्मेदारी सँभालने की क़ाबिलीयत रखते हैं? और अगर ऐसा नहीं है तो इस सूरत में एक दर्दमंद दिल रखनेवाले इन्सान उन्हें सुधारने के लिए कौन सा रास्ता अपनायें हैं जिससे सौ फ़ीसद सहीह नतीजा निकले।

अगर किसी क़ौम के हालात का अन्दाज़ा करना हो तो इसका सबसे अच्छा तरीक़ा येह है कि आप उस क़ौम के जवानों के हालात का बग़ौर मुतालेआ करें। उन की रफ़तार-ओ-गुफ़्तार, नशिस्त-ओ-बरख़ास्त, आपस में मुआवेनत-ओ-मुख़ालेफ़त ग़र्ज़कि अच्छे किरदार के तमाम अवामिल पर एक गहरी नज़र रखें तो आप को सहीह हालात का बख़ूबी अन्दाज़ा हो जाएगा। इन मुख़्तसर जुम्लों के बाद आइए आपको तारीख़ का एक वरक़ उलट कर दिखाऊँ जिस से आप को अन्दाज़ा हो जाएगा के जिस ज़माने में इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने क़याम किया उस वक़्त जवानों के हालात कैसे थे। और इमाम ने उन्हें मशअले राह दिखाने के लिए कौनसा रास्ता दिखाया?

अक्सर या सारे मुसलमान ख़ास तौर से अह्ले सुन्नत हज़रात इस बात को तसलीम करते हैं के इन्क़ेलाबे हुसैन के वक़्त के जवान दूसरे ख़लीफ़ा की ख़िलाफ़त के आख़िर में पैदा हुए थे और तीसरे ख़लीफ़ा के ज़माने में उनकी परवरिश हुई थी। और अमीरे शाम के दौर में उनका अमल दख़ल मुआशेरे में शुरू हुआ था। दूसरे लफ़्ज़ों में उस वक़्त मुसलमानों के दरमियान जो लोग पचास साल के थे उन्होंने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम का दीदार नहीं किया था। आप (स.अ.) की मलकूती बारगाह में हाज़िर होने का शरफ़ उन जवानों को नहीं मिला था। और बिलमुशाफ़ा हज़रत के नूरानी कलाम से इस्तेफ़ादा करना तो दूर की बात है।

और जिन लोगों की उम्र मुसलमानों में साठ साल की थी वोह पैग़म्बर की रेहलत के वक़्त सिर्फ़ दस साल के थे। अह्लेबैत को अगर इस मुआशरे से अलग कर लें तो येह सिन अरबों में खेलने-कूदने की हुआ करती

थी। अस्हाबे पैग़म्बर में जो लोग ज़िन्दा थे उनकी तादाद बहुत कम थी और उनकी उम्र सत्तर साल से ज़्यादा थी। और जिनकी उम्रें ३०-४० के दरमियान थीं वोह दूसरी ख़िलाफ़त के आख़िरी दौर में या तीसरी ख़िलाफ़त में पैदा हुए थे। यानी ६० हिजरी में जवानों की नई नस्ल सरज़मीने अरब पर जो सामने आई थी वो सीरते नबवी और आप के उसवए हुस्ना से नावाक़िफ़ थी।

हुकूमत के असरात

दुनिया के गोशा-ओ-किनार में आप चाहे जहाँ चले जाएँ आप को इस हक़ीक़त का इक़रार करना ही पड़ेगा कि:

अन्नासो अला दीने मुलूकेहिम

लोग अपने बादशाह के दीन पर होते हैं।

इस लेहाज़ से उस ज़माने की हुकूमत को देखते हुए ये अन्दाज़ा लगाना बल्कि इस नतीजे पर पहुँचना मुश्किल न होगा कि उस ज़माने के जवानों की फ़िक्र-ओ-अमल में कौन सा जज़्बा कारफ़र्मा रहा होगा। क्योंकि आज की तरह उस ज़माने में अमल-ओ-ख़बर मुन्तक़िल करने का बेहतरीन और ज़ूदरस ज़रीआ नहीं था। और जो ज़रीआ था भी वो ज़ालिम-ओ-जाबिर हाथों में था। जो सिवाए परवरी और शहवाते नफ़्सी के कुछ और सोचते ही न थे। इस वजेह (वज्ह) से उन जवानों तक पैग़म्बर की सहीह सूरत-ओ-सीरत का इजमाली ख़ाका भी नहीं पहुँच सका और न ही पैग़म्बर की हुकूमत का तलाई दौर उनके सामने आ सका। बल्कि सियासी मन्ज़रनामे पर उभरते हुए जवानों के सामने जो लोग आए वो मोग़ीरा इब्ने शेअबा, सईद इब्ने आस, वलीद-ओ-उमर इब्ने सअद जैसे लोग थे जो हुकूमत में असर-ओ-रुसूख़ के लेहाज़ से मुशीर कारों में शुमार होते थे। और हुकूमत में हाथ की सफ़ाई के अलावा उनके पास दूसरा कोई हदफ़ ही नहीं था और उन सब में भी लूटघसूट, दुनिया तलबी मुश्तरके सिफ़ाते हमीदा समझी जाती थी। इसके अलावा ज़ाहिरी चमक-दमक, गुरूर-ओ-तकब्बुर के साथ साथ क़ौम-ओ-क़बीले का शदीद तअस्सुब, अरबीयत का नशा, ज़ुल्म-ओ-बेरहमी से मुआशरे में एक दबाव क़ाएम रखना उनका महबूब मशग़ला था। और हुकूमत में पहले दर्जे के लोग जो अमलन जवनों के लिए नमूनए अमल होते हैं और जवानों को उन से तहरीक मिलती है ऐसे बदतरीन ग़ासिब और रिशवत ख़ोर अफ़राद थे जो तीसरी ख़िलाफ़त के दौर में अपने ख़ानदान में दौलत की बन्दरबाँट में मसरुफ़ थे। उस दौर का जवान उन के इन हरकात से मुतास्सिर हो रहा था। वोह देख रहा था कि मुआशरे में फ़िस्क़-ओ-फ़ुजूर में मुब्तेला अफ़राद शर्म-ओ-ग़ैरत से बरतरफ़ हैं। मिसाल के तौर पर वलीद इब्ने उक़्बा, ख़लीफ़ा का सौतेला भाई, कूफ़े में गवर्नर था और शराब-ओ-कबाब में इतना मस्त रहता था कि सुब्ह (सुब्ह) की नमाज़ में जब इमामत करने आता तो नमाज़े सुब्ह तीन-चार रकअत पढ़ता था। यही वोह बेशर्म शख़्स है जिसने अपनी बेटी से मुँह काला किया। तारीख़ के औराक़ उस के काले करतूत से भरे हुए हैं।

अब्दुल्लाह इब्ने सअद ख़लीफ़ा का रज़ाई भाई था। उसको मिस्र का गवर्नर बनाया गया और अब्दुल्लाह इब्ने आसिर इब्ने करीज़ जो ख़लीफ़ा का मामूँज़ाद भाई था उसे बसरा का गवर्नर बनाया गया। उसने बसरा को अमवीयों का गढ़ बना दिया। मरवान इब्ने हकम जो उन सब का सरदार था और जो उन सब में सब से ज़्यादा क़ाबिले मलामत है और जो ख़लीफ़ा का दामाद था मगर हक़ीक़त में ख़िलाफ़त की बागडोर जिस के हाथों में थी। ऐसे लोग जब हुकूमत में सरगर्मे अमल होंगे तो कैसा मुआशरा तशकील पाएगा और जवान कैसे होंगे, क़ारेईन इसका ख़ूब अंदाज़ा लगा सकते हैं।

अमीरे शाम जो ख़लीफ़ा-ए-दोव्वुम (दुव्वुम) की तरफ़ से दमिश्क़ और उरदुन (जारडन) का हाकिम था, तीसरे ख़लीफ़ा ने न येह कि उस से हुकूमत नहीं ली बल्कि फ़िलिस्तीन, हमस और जज़ीरा का इलाक़ा भी उसकी हुकूमत (के दाएरएकार) में दे दिया। दरनतीजा अमीरे शाम ने ईरान और रोम की तरक़्क़ी के बहाने कर के अपने लिए ज़ाहिरी ज़र्क़-ओ-बर्क़ और तईशी सामान हकूमत की एक बुनियाद रखी।

हज़रत अली अलैहिस्सलाम की ज़ाहिरी ख़िलाफ़त

के दौर में मुआविया ने सियासी मकर-ओ-फ़रेब और ज़ुल्म-ओ-इस्तेब्दाद के ज़रीए शाम की तरफ़ अपनी एक ताक़त बनाई थी। जिसके नतीजे में अली अलैहिस्सलाम से टकराने की नाकाम कोशिश करता रहा। ज़माना गुज़रता गया और अरब के जवान इसी तब्लीग़ाते बातिला के तह्ते तासीर से एक हुकूमती, सियासी मुआशेरे में अपनी एक साख़्त बना ली।

इसलिए आशूरा के ज़माने के जवान हुकूमत के हाथों ऐसा खिलौना बन गए थे जिन में न तो कोई अख़्लाक़ी क़दरें थी और न ही हक़-ओ-बातिल के दरमियान तमीज़ थी। यहाँ तक कि वो अपनी पहचान भी खो चुके थे। अल्लाह ने मिसाली शख़्सियत की नेअमत जिसकी रहबरी में आख़ेरत को सँवारने का मौक़ा मिलता उन से छीन ली। उस ज़माने के मुसलमान जवानों के नज़दीक बहुत से फ़ज़ाएल-ओ-कमालाते इन्सानी अपना मफ़हूम खो चुके थे। और हुकूमत के सारे कारिन्दे इस बात में जुटे हुए थे कि किस तरह मुआशेरे के लोगों की मअनवीयत को कुचल कर ऐसे वह्शी इन्सान बनाए जाएँ जिन में सोच-समझ की सलाहियत बाक़ी न रहे। यही वजह है कि आप को तारीख़े दमिश्क़ में ज़ाहेरन ऐसे समझदार लोग मिल जाऐंगे जो येह तसव्वुर करते थे के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की ग़मनाक रेहलत के वक़्त बनी उमय्या से ज़्यादा कोई क़रीबी रिश्तेदार न था जो पैग़म्बर का वारिस क़रार पाता। आप इस से अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि झूठे प्रोपगन्डे, गुमराह करनेवाले बयानात किस हद तक मुसलमानों के दरमियान फैले हुए थे। क्या इस से बड़ी कोई मुसीबत एक जवान के लिए हो सकती है? क्या किसी क़ौम के इस तरह के जाहिल जवान से किसी क़िस्म की उम्मीद की जा सकती है? और अगर ख़ुदा नख़ास्ता किसी मज़हब और क़ौम की बागडोर ऐसे निकम्मे, जाहिल, बदकिरदार जवान के हाथ में आ जाए तो आप किस ख़ैर की उम्मीद कर सकते हैं? हरगिज़ हरगिज़ नहीं आप तारीख़ के औराक़ में पढ़ें कि इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम जैसी अज़ीम शख़्सियत को लोग ख़ारेजी कहने लगे इस से बढ़कर जवान और किस जेहालत की पस्ती में जा सकते हैं। यहाँ तक कि इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम से लड़ने के लिए लश्करे कूफ़ा का येह नारा था:

या जैशुल्लाहिरकबू

ऐ अल्लाह के लश्करियो सवार हो जाओ।

क्या आपको इस बात का यक़ीन दिलाने के लिए काफ़ी नहीं है कि अल्लाह और रसूल और अह्लेबैत के दुश्मनों ने अल्लाह के रास्ते से लोगों को दूर करने के लिए हर हथकन्डे को इस्तेमाल किया था।

मेरे भाईयो और बहनो! येह याद रखें के उलूमे अह्लेबैत के अलावा जो पैग़ाम आपके जवानों तक पहुँच रहा है वोह तेज़धार तलवार की तरह है जो हमारे ख़िलाफ़ भी इस्तेमाल की जा रही है। जवान उसी वक़्त क़ौम का सरमाया और बाइसे इज़्ज़त-ओ-शरफ़ हो सकते हैं जब उन्हें तालीमाते अह्लेबैत से सरशार और सहीह और मोहकम अक़ीदे का मालिक बनाया जाए। वरना वोह धोका खा जाएँगे और दुश्मनों के ख़ूनी पंजों में गिरफ़्तार हो कर उनके आलएकार बन जाएँगे। क्योंकि आम तौर से जवान नस्ल पर अक़ीदे से ज़्यादा नफ़सानी ख़ाहिशात का ग़लबा होता है। इस वजह से नस्ले जवान की तरबियत ऐसे क़वी हाथों में होना चाहिए जो जज़बात के अमवाज के रुख़ को हिदायत की तरफ़ मोड़ना सिखाए और जो उन्हें एहसास दिलाए के तुम्हारा सहीह क़दम मुआशेरे में अज़ीम इनक़िलाब बरपा करेगा और तुम्हारी वजह से एक ऐसा मुआशरा वजूद में आएगा जो आला अक़दार का मालिक होगा। इसी वजह से इज्तेमाई उलूम के माहिरीन जवान नस्ल को तहरीक देने वाले मुअस्सिर अवामिल की तलाश को बहुत ज़्यादा अहम्मीयत देते हैं।

आशूरए हुसैनी नस्ले जवान को तहरीक देने के लिए सब से मुअस्सिर आमिल है बशर्ते कि आप आशूरा का सहीह मफ़हूम जवानों के गोश गुज़ार करते रहें और ज़हर आलूद तीर जो चारों तरफ़ से इमाम हुसैन के म. कसद को कम करने के लिए चलाए जा रहे हैं उन्हें उलूमे अह्लेबैत के दरिया में बुझाते रहें। ये बात ज़ेह्न

बाकी सफह न. १९

अज़ादारी.... फ़र्शे ज़मीं से अर्शे बरीं तक मुसीबते सैयदुश्शोहदा के असरात

हज़राते अइम्मए मासूमीन अ़लैहिमुस्सलाम से जो रवायतें नक़्ल हुई हैं उनमें एक अहम बाब ज़ियारतों पर मुश्तमिल है। इस मौज़ूअ पर हमारे मोअ़तबर और मुस्तनद ओलमा ने किताबें तालीफ़ की हैं और नेहायत मोअतबर और सहीहुस्सनद ज़ियारतें नक़्ल की हैं।

आम तौर से लोग ज़ियारतों के सवाब पर तवज्जोह देते हैं और ज़ियारत में जो बातें बयान की गई हैं और ज़ियारत के वक़्त जिन अल्फ़ाज़ और अल्क़ाब से अपने इमाम अ़लैहिस्सलाम को मुख़ातिब कर रहे हैं उसकी तरफ़ बहुत कम तवज्जोह होती है। यानी ज़ियारत में जो मफ़ाहीम बयान किए गए हैं उसकी तरफ़ शायद कभी मुतवज्जेह होते हों। लेहाज़ा इस बात का भी ख़याल नहीं रहता कि हम इस ज़ियारत के ज़रीए अपने इमाम अ़लैहिस्सलाम से क्या मुअ़ाहेदा और वअ़दा (वादा) कर रहे हैं। अगर येह एहसास हो जाए कि हमने क्या वअ़दा किया है और किस किस को गवाह बनाकर वअ़दा किया है तो बहुत मुमकिन है कि हम उस पर अ़मल भी करने लगें। क्योंकि हर शरीफ़ इन्सान अपने वअ़दे और मुअ़ाहेदे का ख़याल रखता है और जब इन्सान अपनी अशरफ़ीयत के मरकज़ की तरफ़ परवाज़ करता है तो कश्फ़-ओ-करामात के पर्दे उसकी निगाह से हटने लगते हैं।

हज़ार नुक्तए बारीकतर ज़मू इनजा अस्त

ज़ियारतें अइम्मए मासूमीन अ़लैहिमुस्सलाम की मन्ज़ेलत-ओ-अ़ज़मत की मारेफ़त का बेहतरीन और मोअ़तबर तरीन ज़रीआ़ हैं। इन ज़ियारतों में जहाँ एक तरफ़ अइम्मए मासूमीन अ़लैहिमुस्सलाम के फ़ज़ाएल-ओ-कमालात का तज़केरा और उनकी क़ुरबानियों का ज़िक्र है वहाँ उन मक़ासिद का बयान भी है जिसके लिए आप हज़रात ने हर तरह के मज़ालिम बर्दाश्त किए और शहादत क़ुबूल की। उसी के साथ साथ आपके दुश्मनों की हक़ीक़त और उनके दर्दनाक अज़ाब का भी ज़िक्र है। हमारी ज़िम्मेदारियों का तज़केरा है और येह भी तज़केरा है कि उनकी शहादत के असरात कहाँ कहाँ तक गए हैं और किस किसने ग़म मनाया है। इस सिलसिले में सैयदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ज़ियारतें ख़ास अहम्मीयत की हामिल हैं।

अगर इन्सान सिर्फ़ इन ज़ियारतों पर नज़र करे तो बाक़ाएदा अन्दाज़ा हो जाएगा कि हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की अज़ादारी कहाँ कहाँ तक फैली हुई है और किस किस ने आपका ग़म मनाया है। और येह भी वाज़ेह हो जाएगा कि हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की अज़ादारी को महदूद करने या उसके असरात को कम करने की भी कोशिश किसी भी शक्ल में हो हरगिज़ हरगिज़ कामियाब न होगी क्योंकि अज़ाए हुसैन वोह क़ुरआनी अज़ा है जिसे मशीअते एलाही ने क़िरतासे वजूद पर जौहरे अबदीयत से तहरीर फ़र्माया है जिसके बार बार पढ़ने से एक निखार पैदा होता है और इन्सान के वजूद में शराफ़त लहकने लगती है। ज़रा याद कीजिए वोह सबसे पहली मजलिस जिसमें ख़ुदा के हुक्म से जिबरईल ज़ाकिर थे और रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम सामेअ़ थे। बादहू रसूले ख़ुदा ज़ाकिर थे, अ़ली-ओ-फ़ातेमा सामेअ़ थे। क्या मन्ज़र रहा होगा और किस तरह फ़ज़ा महकी होगी।

अब हम हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की

ज़ियारत पर एक नज़र करेंगे और बात को आगे बढ़ाते हुए इख़्तेसार के पेशे नज़र सिर्फ़ दो ज़ियारतों के बाज़ हिस्से पेश करने की सआदत हासिल करेंगे।

सेक़तुल मोहद्देसीन जनाब शेख़ अब्बास क़ुम्मी अलैहिर्रहमा ने अपनी गराँक़द्र किताब मफ़ातीहुल जेनान में हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की ज़ियारत के बाब में सबसे पहले जो ज़ियारत नक़्ल की है उसके बाज़ अल्फ़ाज़ इस तरह हैं:

यूनुस इब्ने ज़िबयान ने हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में अर्ज़ किया: मैं इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ज़ियारत करने के लिए जाना चाहता हूँ। मैं किस तरह इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ज़ियारत करूँ?

फ़र्माया: जब इमाम की ज़ियारत को जाओ, आबे फ़ुरात से ग़ुस्ल करो, पाकीज़ा कपड़े पहनो, बरहना पा हो क्योंकि तुम ख़ुदा और उसके रसूल के हरम में हो। और रास्ते में चलते वक़्त ये कलेमात पढ़ो:

अल्लाहो अकबर व ला एलाहा इल्लल्लाह व सुबहानल्लाह

सलवात पढ़ो...

इसका मतलब येह है कि इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की ज़ियारत इन्सान को ख़ुदा से क़रीब करती है। तौहीद का दर्स देती है। दीन सिखाती है और शिर्क से बरअत का हुक्म देती है।

ज़ियारत के बाज़ फ़िक़रे इस तरह हैं:

अशहदो अन्ना दमका सकना फ़िलख़ुल्दे वक़शअर्रत लहू ओज़िल्लतुल अ़र्शे बका लहू जमीउलख़लाएक़े व बकत लहुस्समावातुस्सब्ए वल अर्ज़ूनस्सब्ए व मा फ़ीहिन्ना व मा बैनाहुन्ना व मँय्यतक़ल्लबो फ़िल जन्नते वन्नारे मिन ख़ल्क़े रब्बना व मा यरा व मा ला योरा ...

''मैं गवाही देता हूँ यक़ीनन आपका पाकीज़ा ख़ून अबदी जन्नत में महफ़ूज़ है। उसको देखकर अ़र्शे एलाही के बाशिन्दे थरथरा गए और उस पर तमाम की तमाम मख़लूक़ात ने गिरिया किया। उस पर सातों आसमानों और सातों ज़मीनों ने गिरिया किया और उन तमाम चीज़ों ने गिरिया किया जो आसमानों और ज़मीनों के दरमियान हैं। और हमारे ख़ुदा की उन मख़लूक़ात ने भी गिरिया किया जो जन्नत या जहन्नम में थे, और उन चीज़ों ने भी गिरिया किया जो देखी नहीं जा सकती हैं...''

अर्शे एलाही मख़लूक़ाते ख़ुदावन्दी में बलन्दतरीन मन्ज़िल है। येह वोह जगह है जहाँ इस दुनिया में आने से पहले अइम्मए मासूमीन अ़लैहिमुस्सलाम का क़याम था। ज़ियारते जामेआ कबीर में है:

ख़लक़कुमुल्लाहो अनवारन फ़जअलकुम बेअ़र्शेही मुहदेक़ीन

''ख़ुदा ने आपको नूर की शक्ल में पैदा किया और आपको अपने अ़र्श पर क़रार दिया।''

ज़मीन पस्त तरीन मन्ज़िल है जिसकी तनवीर-ओ-तौक़ीर अइम्मए मासूमीन अ़लैहिमुस्सलाम के वुरूदे मसऊद की मरहूने मिन्नत है। रूहानीयात-ओ-मानवीयात में अ़र्श बलन्द तरीन मन्ज़िल है जबकि माद्दीयात में ज़मीन पस्त तरीन मन्ज़िल क़रार पाती है। इब्तेदा से इन्तेहा तक और उनके दरमियान जो भी है सब ने इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम पर गिरिया किया है।

क़ाबिले दीद और नाक़ाबिले दीद मख़लूक़ात ने भी गिरिया किया। आज का इन्सान हज़ारों साल की मेहनत के बाद इस नतीजे पर पहुँचा है कि दुनिया में ऐसी भी मख़लूक़ात हैं जो आम आँख से क्या बल्कि माइक्रोस्कोप से भी मुश्किल से देखी जा सकती हैं। लेकिन हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम ने हज़ारों साल पहले ज़ियारत की सूरत में इस हक़ीक़त की तरफ़ मुतवज्जेह कर दिया था। काश हम ज़ियारत के इन मतालिब पर तवज्जोह देते तो 'चादर सी निगाहों से सरकती नज़र आए' का मिसदाक़ होते।

गिरिया क्या है? इसकी तारीफ़-ओ-तमजीद क्या है?

गिरिये का तअ़ल्लुक़ शऊर, एहसास और मुहब्बत से है। गिरिया सिर्फ़ मामूली ग़म या तअस्सुर से पैदा नहीं होता है। गिरिया ग़म की वोह मन्ज़िल है जहाँ ज़ब्त करना मोहाल होता है। दिल में बर्दाश्त की ताक़त नहीं रहती। गिरिया शिद्दते ग़म की अ़लामत है। इसके अ़लावा गिरिया उस वक़्त होता है जब सुनने वाले का साहेबे ग़म से क़रीबी तअ़ल्लुक़ हो वरना दुनिया में हर रोज़ एक से एक वाक़ेआत रूनुमा होते रहते हैं मगर हमारी आँखें अश्कबार नहीं होती हैं बल्कि उसका कोई तअस्सुर भी नहीं पैदा होता। लेहाज़ा गिरिया उस वक़्त होगा जब साहेबे ग़म से एक ख़ास तअ़ल्लुक़ हो और मईयत शदीद हो।

जब याद तेरी आए है तब आँख भर आए
येह ज़िन्दगी करने को कहाँ से जिगर आए

इसके अलावा अश्कबार वोह होगा जो शऊर रखता होगा, दर्द रखता होगा। मुहब्बत और तअ़ल्लुक़ रखता होगा। ज़ियारत के जुम्लों से वाज़ेह होता है कि ख़ुदा की हर मख़लूक़ बाशऊर हस्सास और दर्दमन्द है। येह हमारी कोताह बीनी है कि हम उनको ला शऊर या बेहिस ख़याल करते हैं। अगर इन चीज़ों में शऊर और एहसास न होता तो क्योंकर उनको हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की अ़ज़ीम मुहब्बत का इल्म होता और अगर एहसास न होता तो क्यों आप पर शदीद गिरिया करतीं! और अगर हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के असरात उन तक न पहुँचे होते तो क्यों ये तमाम मख़लूक़ात मुतअस्सिर होतीं। बक़ौल मोलवी वोह कहती हैं:

मा समीअम व बसीरम बाशीम
बा शुमाना महरमाने मा ख़ामुशीम

ख़ुदावन्दे आलम की हर एक मख़लूक़ हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के ग़म से ग़मज़दा क्यों है। इसका तज़केरा आगे चलकर करेंगे। फ़िलहाल ज़ियारते आशूरा के चन्द जुम्ले नक़्ल करते हैं।

...या अबा अ़ब्दिल्लाह लक़द अ़ज़ोमतिर्रज़ीयतो व जल्लत व अ़ज़ोमतिल मुसीबतो बेका अ़लैना व अला जमीए अह्लिल इस्लामे व जल्लत व अ़ज़ोमत मुसीबतोका फ़िस्समावाते अ़ला जमीए अह्लिस्समावात...

''ऐ अबा अ़ब्दिल्लाह आपकी मुसीबत और शहादत हमारे लिए बहुत ही ज़्यादा अ़ज़ीम और बड़ी है। बल्कि ये तमाम अह्ले इस्लाम के लिए अ़ज़ीम और बड़ी है। और आपकी मुसीबत आसमानों के लिए अ़ज़ीम-ओ-जलील है। बल्कि तमाम के तमाम आसमान वालों के लिए अ़ज़ीम है।''

मुसीबत की अ़ज़मत सिर्फ़ ज़ुल्म और मसाएब से तअ़ल्लुक़ नहीं रखती है बल्कि इसमें मुसीबत ज़दा और मज़लूम की अ़ज़मत को भी नज़र में रखना होगा। इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की मुसबीत तमाम अह्ले इस्लाम के लिए अज़ीम है। इसका मतलब येह है कि अगर कोई हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की इस क़द्र अज़ीम मुसीबत से भी मुतास्सिर न हो तो वोह अह्ले इस्लाम में शुमार नहीं किया जाएगा। और येह मुसीबत कुछ ऐसी है कि इस पर आसमान और अह्ले आसमान मुतास्सिर हुए। शदीद गिरिया किया और शुमूलियत अह्ले इस्लाम हर एक के लिए, येह एक अ़ज़ीम मुसीबत है।

ज़ाहिर है आसमान और अह्ले आसमान ज़मीन में होने वाले वाक़ेआत से मुतास्सिर नहीं होते। लेकिन इस वाक़ए कर्बला (करबला) की अ़ज़मत येह है कि आसमानों पर इसका असर छाया हुआ है। हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की मुसीबत से न सिर्फ़ आसमान और अह्ले आसमान ग़मज़दा हैं बल्कि येह उनके लिए अ़ज़ीम मुसीबत है। अगर कोई वाक़ेआ अह्ले आसमान के लिए अ़ज़ीम-ओ-जलील हो तो उसकी अ़ज़मतों का अन्दाज़ा लगाना किसी इन्सान के बस की बात नहीं है।

तारीख़ की मोअ़तबर किताबों में इस तरह के वाक़ेआत मज़कूर हैं कि हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की शहादत के बाद मैदाने कर्बला में दिन

रहते इतनी ज़्यादा तारीकी छा गई कि तारे नज़र आने लगे। याद रहे कि ज़बरदस्त बदलियों में भी तारे नज़र नहीं आते हैं। येह इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की शहादत का असर था कि सूरज ने ग़मज़दा होकर अपना नूर समेट लिया। इसके बाद उफ़ुक़ पर सुर्ख़ी नज़र आने लगी। कहते हैं कि इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की शहादत से पहले उफ़ुक़ इस तरह सुर्ख़ नहीं होता था। शहादत के बाद चालीस दिन तक जिस पत्थर को उठाया जाता था उसके नीचे से ताज़ा ख़ून निकलता था। दर-ओ-दीवार पर तुलूअ और ग़ुरूबे आफ़ताब के वक़्त ख़ून नज़र आता था। इस काएनात में कोई ऐसी शै नहीं थी जो हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की दर्दनाक शहादत से मुतास्सिर न हुई हो और उसने इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का ग़म न मनाया हो। ये असरात एक जज़बाती असरात नहीं थे बल्कि हक़ीक़ी असरात थे। हर एक शै इस शहादते उज़मा से ग़मज़दा थी और येह सिलसिला आज तक जारी है।

मोअ़तबर किताबों में इस तरह की मुतअ़द्दिद रवायतें मिलती हैं कि हर रोज़ अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम और मुक़र्रबीने बारगाहे एलाही फ़रिश्तों की एक सफ़ इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की ज़ियारत को आती है और वापस जाती है। गोया हर वक़्त इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के हरमे मुक़द्दस में अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम और मुक़र्रबाने बारगाहे ख़ुदावन्दी फ़रिश्ते ज़ियारत में मशग़ूल रहते हैं। रवायतों में सिर्फ़ अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम और फ़रिश्तों की ज़ियारत का तज़केरा नहीं है बल्कि येह भी है कि ये हज़रात जब ज़ियारत को आते हैं तो इस तरह आते हैं कि बाल बिखरे हुए, सरों पर ग़ुबार, रोते बिलकते, नेहायत ही ज़्यादा ग़मज़दा सूरत में आते हैं। रवायतें इस बात का सुबूत हैं कि १४०० बरस गुज़रने के बाद भी इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का ग़म उतना ही है जितना सन् ६१ हिजरी की आशूर को था। जब मअ़सूम अम्बिया और फ़रिश्तों का येह हाल हो तो इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की अ़ज़ादारी किसी की नज़र में चाहे जितना ज़्यादा नज़र आए मगर दर हक़ीक़त वोह बहुत ही कम है। जनाब अज़ीज़ बनारसी का एक शेर है:

लोग कहते हैं कि तुम लोग बहुत रोते हो
हम को ज़हरा से नदामत है कि कम रोते हैं

हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के ग़म की गहराई और गीराई का राज़ तो ख़ुदा ही को मालूम है। ख़िलक़ते काएनात के सिलसिले में जो रवायतें ज़िक्र हुई हैं उसके मुतालेआ से वाज़ेह होता है कि अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम ही की बेना पर काएनात ख़ल्क़ हुई है और उन्हीं के सदक़े में इस वक़्त काएनात को ज़िन्दगी मिल रही है। जिसको जो कुछ मिल रहा है वोह बस अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम की बदौलत और उनके ज़रीए मिल रहा है। शराफ़त का तक़ाज़ा येही है कि इन्सान क्या बल्कि हर शै अपने वलीए नेअ़मत के ग़म में ग़मज़दा होकर अपने वजूद का हक़ अदा करे। इख़्तेसार के पेशे नज़र रवायत का सिर्फ़ तरजुमा पेश करते हैं।

जनाब अल्लामा मजलिसी अ़लैहिर्रहमा ने अपनी गराँक़द्र किताब बेहारुल-अनवार जिल्द ५७ सफ़हा १६९ पर ११२वीं हदीस इस तरह नक़्ल फ़र्माई है:

जनाब जाबिर जोअ़फ़ी ने हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर अ़लैहिस्सलाम से रवायत नक़्ल की है।

इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़र्माया:

ऐ जाबिर ख़ुदा था और उसके अलावा कुछ नहीं था। न कोई मअ़लूम (मालूम) और न कोई मजहूल। ख़ुदावन्द आलम ने सबसे पहले हज़रते मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम को पैदा किया और उनके साथ हम अह्लेबैत को अपने नूरे अ़ज़मत से पैदा किया। हम उसके सामने सब्ज़ साए की सूरत में रहे। उस वक़्त न आसमान था न ज़मीन, न मकान, न रात न दिन, न सूरज न चाँद। हमारा नूर ख़ुदा के नूर से इस तरह जलवागर था जिस तरह सूरज से उसकी शोआ़एँ।

हम ख़ुदा की तसबीह-ओ-तक़दीस करते थे और उसकी हम्द-ओ-सना करते थे और

उसकी एबादत में हमावक़्त मशग़ूल रहते थे। इसके बाद ख़ुदावन्द आलम ने मख़लूक़ात से ख़िलक़त का सिलसिला शुरू किया। मकान को पैदा किया और मकान पर येह लिखा:

ला एलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह अलीयुन अमीरुल मोमेनीन व वसीयोहु व अययदतोहु व नसरतोहु।

''अल्लाह के अलावा कोई और मअ़बूद नहीं है। मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, अ़ली अमीरुल मोमेनीन और उनके वसी हैं। मैंने अ़ली के ज़रीए उनकी ताईद और उनकी नुसरत की।''

उसके बाद ख़ुदावन्द आलम ने अ़र्श को पैदा किया और अ़र्श के शामियाने पर येही एबारत तहरीर की। फिर ख़ुदावन्द आलम ने आसमानों को पैदा किया और उसके किनारों पर येही एबारत तहरीर फ़र्माई। फिर जन्नत-ओ-जहन्नम को पैदा किया वहाँ भी येही एबारत तहरीर फ़र्माई। फिर ख़ुदा ने मलाएका को पैदा किया और उनको आसमान में जगह दी। फिर ख़ुदा वन्द आलम ने हवा को पैदा किया और उस पर भी यही एबारत तहरीर की। फिर ख़ुदा ने जिन्नातों को पैदा किया और उनको हवा में ठहराया। फिर ख़ुदावन्द आलम ने ज़मीन को पैदा किया और उसके कोने-कोने पर यही एबारत तहरीर की। इस बेना पर आसमान बग़ैर किसी सुतून के क़ाएम है और ज़मीन बरक़रार है। ..... फिर ख़ुदावन्द आलम ने आदम अलैहिस्सलाम को ज़मीन की ख़ाक से पैदा किया .....

लेहाज़ा हम ख़ुदावन्द आलम की पहली मख़लूक़ हैं और सबसे पहली मख़लूक़ हैं जिसने ख़ुदा की एबादत (इबादत) की और उसकी तसबीह की और हम ही मख़लूक़ात की ख़िलक़त का सबब हैं। हम ही तमाम मलाएका और इन्सानों की तसबीह और एबादत का सबब हैं।

(बेहारुल अनवार जिल्द ५७ सफ़हा १६९ हदीस ११२)

इस हदीस से येह वाज़ेह है कि ख़ुदावन्द आलम ने सबसे पहले अपने नूरे अ़ज़मत से मुहम्मद और आले मुहम्मद अ़लैहिमुस्सलाम को ख़ल्क़ किया। रोज़े अव्वल से येह ख़ुदा की तसबीह-ओ-तक़दीस करते थे और उसकी एबादत करते थे।

जब ख़ुदा ने इस काएनात को ख़ल्क़ किया तो उसकी पेशानी पर अपनी तौहीद, रसूल की रिसालत और अली की इमामत तहरीर फ़र्माई। इससे वाज़ेह होता है कि काएनात की पेशानी पर हमारा ही कलेमा **ला एलाहा इल्लल्लाह, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह, अलीयुन वलीयुल्लाह** तहरीर है।

अब इसी सिलसिले की एक दूसरी रवायत मुलाहेज़ा हो। इख़्तेसार के पेश नज़र तर्जुमे पर इक्तेफ़ा करते हैं। येह रवायत अल्लामा मजलिसी अ़लैहिर्रहमा ने ''मिसबाहुल अनवार'' के हवाले से अपनी गराँक़द्र किताब 'बेहारुल अनवार' में ज़िक्र फ़र्माई है। अनस ने हज़रत रसूलेख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम से नक़्ल फ़र्माया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने फ़र्माया:

''यक़ीनन अल्लाह ने मुझे और अ़ली को पैदा किया, फ़ातेमा, हसन और हुसैन को पैदा किया, जनाब आदम को पैदा करने से पहले। उस वक़्त न आसमान का शामियाना था और न ज़मीन का फ़र्श। न ज़ुलमत का गुज़र था न नूर का वजूद, न सूरज था और न चाँद और न आग।''

आँहज़रत ने फ़र्माया:

ऐ चचा जब ख़ुदा ने हम लोगों को पैदा करना चाहा तो उसने एक कलेमा कहा उससे नूर पैदा किया। फिर एक दूसरा कलेमा कहा उससे रूह को पैदा किया। फिर नूर को रूह में मिलाया उससे मुझे, अली, फ़ातेमा, हसन और हुसैन को पैदा किया। हम उस वक़्त ख़ुदा की तसबीह कर रहे थे जब तसबीह का वजूद न

था और उस वक़्त तक़दीस की जब तक़दीस का वजूद नहीं था (यानी हमने येह तसबीह किसी से हासिल नहीं की, हमें किसी मख़लूक़ ने तअलीम (तालीम) नहीं दी) जब ख़ुदा वन्द आलम ने अपनी मख़लूक़ात को पैदा करना चाहा तो मेरे नूर को शक़ किया और उससे अर्श को पैदा किया तो अर्श मेरे नूर से है और मेरा नूर अल्लाह के नूर से है। मेरा नूर अर्श से अफ़ज़ल है।

इसके बाद ख़ुदा ने मेरे भाई अली के नूर को शिगाफ़्ता किया उससे फ़रिश्तों को पैदा किया तो फ़रिश्ते अली के नूर से हैं और अली का नूर अल्लाह के नूर से है और अली फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हैं।

इसके बाद मेरी बेटी फ़ातेमा के नूर को शिगाफ़्ता किया उससे आसमानों को और ज़मीन को पैदा किया तो आसमान और ज़मीन मेरी बेटी फ़ातेमा के नूर से हैं और मेरी बेटी फ़ातेमा का नूर अल्लाह के नूर से है और मेरी बेटी आसमानों और ज़मीन से अफ़ज़ल है।

फिर ख़ुदा ने मेरे फ़र्ज़न्द हसन के नूर को शिगाफ़्ता किया और उससे सूरज और चाँद को पैदा किया तो सूरज और चाँद मेरे फ़र्ज़न्द के नूर से हैं और हसन का नूर अल्लाह के नूर से है और हसन सूरज और चाँद से अफ़ज़ल हैं।

फिर ख़ुदा ने मेरे फ़र्ज़न्द हुसैन के नूर को शिगाफ़्ता किया और उससे जन्नत और हूरुल ऐन को पैदा किया तो जन्नत और हूरुल ऐन मेरे फ़र्ज़न्द के नूर से हैं और मेरे फ़र्ज़न्द का नूर अल्लाह के नूर से है और मेरा फ़र्ज़न्द हुसैन जन्नत और हूरुल ऐन के नूर से अफ़ज़ल है।''

(बेहारु अनवार जिल्द ५७, सफ़हा १९१, १९३, हदीस १३९)

इस हदीस से अन्दाज़ा हो जाता है कि तमाम काएनात मुहम्मद और आले-मुहम्मद अलैहिमुस्सलाम के नूरे मुक़द्दस से पैदा की गई हैं। तमाम काएनात उन्हीं के नूर का परतो है। जब काएनात मुहम्मद और आले-मुहम्मद अलैहिमुस्सलाम का वजूदी असर है तो अह्ले बैत अलैहिमुस्सलाम से काएनात का एक रिश्ता और वाक़ई रिश्ता है। एक जज़बाती और वक़्ती तअल्लुक़ नहीं है। येह तअल्लुक़ वालेदैन और फ़र्ज़न्द के तअल्लुक़ से ज़्यादा क़वी है। अब ज़रा ग़ौर फ़र्माएँ रिश्ता और तअल्लुक़ जितना ज़्यादा गहरा और शदीद होगा, ग़म का असर भी उतना ही ज़्यादा अमीक़ और वसीअ होगा। अह्लेबैत का काएनात से दो नेहायत मुस्तहकम रिश्ता है। एक वजूद का रिश्ता और दूसरा हेदायत का रिश्ता। लेहाज़ा येह बात पायए सुबूत को पहुँची कि सारी काएनात को ख़ुदा की मअरेफ़त (मारेफ़त) और उसकी तसबीह-ओ-तक़दीस आले-मुहम्मद अलैहिमुस्सलाम ही की तअलीम से हासिल होती है।

और येह रिश्ता वक़्ती नहीं बल्कि अबदी है। जज़बाती नहीं वजूदी है। एतेबारी नहीं हक़ीकी है। अब अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम के ग़म में और ख़ासकर सैयदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के ग़म में तमाम काएनात का मुतास्सिर होना एक फ़ितरी अम्र है। और ग़म की शिद्दत रिश्ता-ओ-पेवन्द की बेना पर है। रिश्ता हक़ीक़ी है लेहाज़ा येह ग़म भी हक़ीक़ी है। चूँकि येह रिश्ता कभी भी मुनक़ता नहीं हो सकता लेहाज़ा इस ग़म का असर भी कभी ख़त्म नहीं होगा। अगर काएनात येह ग़म न मनाए तो नाख़लफ़ कहलाए।

इस रवायत से एक बात येह भी वाज़ेह होती है कि जन्नत की ख़िलक़त इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के नूर से हुई है। लेहाज़ा इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के बाब में क़दम क़दम पर जन्नत है। इन्सान के ज़िक्र-ओ-फ़िक्र, सीरत-ओ-किरदार, ख़ाब-ओ-ख़र सब इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की मुहब्बत में धुल जाएँ तो और एक वक़्त उस पर ऐसा आए जिसे शाएर ने बयान किया है।

मुहब्बत में एक ऐसा वक़्त भी आता है इन्साँ पर।
कि तारों की चमक से चोट लगती है रगे जाँ पर।

तो उस इन्सान का दिल तजल्लियाते नूरे एलाही का

आशियाना बन जाता है। इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की अ़ज़ीम मुसीबत से न सिर्फ़ काएनात मुतास्सिर है बल्कि वोह हज़रात सबसे ज़्यादा ग़मज़दा हैं जो वज्हे तख़लीक़े काएनात हैं। येह बात ज़ेह्न में रहे कि हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम इस काएनात में सबसे अफ़ज़ल-ओ-बरतर हैं। आप (सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम) का हर अमल ख़ुदा की अ़ज़मत का तरजुमान है। आपका (स.अ.) कोई अ़मल आम इन्सानों के अ़मल की तरह जज़बाती नहीं है।

जनाब इब्ने अ़ब्बास का बयान है:

मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम को दोपहर में ख़ाब में देखा कि बाल बिखरे हुए हैं और उनपर ख़ाक पड़ी हुई है। उनके दस्ते मुबारक में एक शीशी है जिसमें ख़ून है। मैंने अ़र्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान येह क्या है?

फ़र्माया: येह हुसैन और उनके असहाब का ख़ून है। आज सुब्ह से मैं इस ख़ून को चुन रहा हूँ।

अम्मार का बयान है जब हमने शुमार किया तो मअ़लूम (मालूम) हुआ कि येह वही दिन था जिस दिन इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम क़त्ल किए गए थे।

एक रवायत में इस तरह है:

जिस दिन इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम क़त्ल किए गए उसी रात इब्ने अब्बास ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम को ख़ाब में देखा कि उनके हाथ में एक शीशी है जिसमें ख़ून है। दर्याफ़्त किया: ऐ अल्लाह के रसूल येह क्या है?

फ़र्माया:

''येह हुसैन और उनके असहाब का ख़ून है मैं इसको अल्लाह की बारगाह में ले जा रहा हूँ।''

(तारीख़े इब्ने असीर, जिल्द १, सफ़हा ५८२, मतबूआ बेरूत)

हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही का इस तरह से ग़मज़दा होना, बालों का बिखराना और उस पर गर्द-ओ-गुबार का होना काएनात का ग़मज़दा होने से कहीं ज़्यादा ग़ैर मअमूली है। इस बेना पर इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम पर होने वाले मज़ालिम की शिद्दत का अन्दाज़ा लगाना किसी ग़ैर के बस की बात नहीं है।

अगर हम हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की सुन्नत पर अ़मल करना चाहते हैं और काएनात की वज्हे ख़िलक़त से हम आहंग होना चाहते हैं और अपने वजूद के तक़ाज़ों को पूरा करना चाहते हैं तो हमें चाहिए कि हम इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का ग़म मनाएँ और शिद्दत से मनाएँ। हालाँकि हम क्या और हमारे ग़म की शिद्दत क्या। इस ग़म में आँसू बहाने वाले तो वोह हैं जिनके लिए नफ़ीस मरहूम आलल्लाहो मक़ामहू ने कहा है:

रोने में फ़ुज़ूँ हैं चश्म से चश्म,
दरिया दरिया से बढ़ गए हैं।

सफ़ह न. १२ का बाक़ी

में रहे के इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के मक़सद को बा. की रखने की ज़िम्मेदारी अल्लाह तअ़ाला के तवाना हाथों में है। इसलिए अल्लाह तअ़ाला इमाम के ग़म को हमेशा मोमेनीन के दिलों में तर-ओ-ताज़ा रखेगा। इसलिए हमारा सिर्फ़ इतना काम है कि हम इस अ़ज़ीम नेअ़मत का शुक्र अदा करते रहें। आशूरा ही वोह चरा. ग है जो इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने सिसकती हुई दुनिया के जवानों को गुमराही से निकालने के लिए अपनी और अपने अइ़ज़्ज़ा की क़ुर्बानी दे कर रोशन किया है। आज हम हुसैन और वारिसे हुसैन के ज़िक्र से अपने जवानों को वोह राह दिखा सकते हैं जिस पर वोह चल कर अबदी सअ़ादत हासिल कर सकते हैं और इसी तरह के जवान क़ौम का सरमाया और मुस्तक़बिल हो सकते हैं। उन्हीं के तवाना कंधों पर आँखें बन्द कर के हम इत्मीनान और सुकून के साथ दुनिया से रुख़सत हो सकते हैं।

इस उम्मीद के साथ कि हम आशूरा से वोह अ़ज़ीम फ़ायदा हासिल कर सकें जिसके लिए इमाम ने इतनी अ़ज़ीम क़ुर्बानी पेश की। आख़िर में दुआगो हैं कि अल्लाह वारिसे हुसैन के ज़ुहूरे पुरनूर में ताजील फ़रमाए और ज़मीन को हज़रत के ज़ुहूर के लिए आमादा फ़रमाए और हमें इमाम के हक़ीक़ी नौकरों में क़रार दे। आमीन।

ज़ियारते नाहिया - एक मुख़्तसर वज़ाहत

इस साल अल-क़ाएम अल-मुन्तज़र के मुहर्रम ख़ुसूसी शुमारा के लिए हमने ज़ियारते नाहिया का इन्तेख़ाब किया है।

मुक़द्दमा

ज़ियारते नाहियए मुक़द्दसा के तआरुफ़ के लिए हम ने इस तआरुफ़ का इन्तेख़ाब किया है जो शहीदे मेहराब हज़रत मौलाना सैयद मोहम्मद जाफ़र साहब ज़ैदी (रहमतुल्लाह अलैह कि जिन की शहादत २८ ज़िलहिज्जा १४०० हिजरी मुताबिक़ ७ नवम्बर १९८० ईसवी लाहौर में वाक़े हुई) ने तहरीर फ़रमाया था। एक मुख़तसर ख़ुतबा के बाद आप ने क़लमबन्द किया, ''येह ज़ियारत अस्ल में वोह तोहफ़ए सलाम है और वोह नज़्रे अक़ीदत है जिस को हज़रत साहेबुल अम्र अलैहिस्सलाम ने अपने जद्दे मज़लूम ख़ामिसे आले एबा हज़रत सैयदुश्शोहदा अलैहिस्सलाम की बारगाह में पेश किया है और बउनवाने सलाम अपने जद्दे मज़लूम का मर्सिया कहा है और उनके हौलनाक मसाएब-ओ-आलाम का तज़केरा कर के नौहा किया है। इस ज़ियारत की जलालते क़द्र और अज़मते मक़ाम की वज़ाहत के लिए यही काफ़ी और बस है कि येह कलिमतुल्लाहुलबाक़िया के कलेमात हैं।

व जअल्ना कलेमतन बाक़ियतन फ़ी अक़ेबेही

और हम ने कलेमए बाक़िया को उन की पुश्त में क़रार दिया।

ग़ैबते सुग़रा में जिन चार हज़रात ओलमाए कराम ने नेयाबते इमाम के फ़राएज़ अंजाम दिए हैं और इमाम (अलैहिस्सलाम) के इर्शादाते आलिया और अहकामे जारिया उनके वसीले से मिल्लते अह्लेबैत तक पहुँचे हैं, वही हज़रात इस ज़ियारते उज़्मा के लिए हमारे और हमारे इमाम के दरमियान वसीलए मोहकमा हैं। हमारे अजल्लए ओलमाए कराम ने इस ज़ियारत को मोतबर क़रार दे कर कुतुबे ज़ियारत में तहरीर फ़र्माया है। अल्लामा मजलिसी रहमतुल्लाह अलैहे ने अव्वलन अपनी किताब तोहफ़तुज़्ज़ाएर में इस ज़ियारत को ज़ियारतों के सिलसिले में तहरीर फ़र्माया है जो अइम्मए मासूमीन अलैहिमुस्सलाम से मनक़ूल और मासूर हैं और तालीफ़े ओलमा में से नहीं हैं। अल्लामा मजलिसी (रह) मज़कूर ने ज़ियारते नाहिया को सैयद इब्ने ताऊस और शैख़ मोहम्मद बिन अल-मशहदी के हवाले से नक़्ल फ़र्माया है। शैख़ुत्ताएफ़ा अबू-जाफ़र तूसी अलैहिर्रहमा ने भी बराहेरास्त इब्ने अय्याश से इसी ज़ियारते नाहिया की रिवायत की है। जनाब शैख़ मुफ़ीद अलैहिर्रहमा जो शैख़ अबू जाफ़र तूसी (रह) और शैख़ नजाशी (रह) के उस्ताद हैं, उन्होंने भी अपनी किताब अल-मज़ार में ज़ियारते नाहिया को बयान फ़र्माया है। सैयद इब्ने ताऊस ने भी अपनी किताब इक़बाल में ज़ियारते नाहिया को पेश किया है।

ग़र्ज़ेकि ओलमाए आलामे शीआ ने इस ज़ियारत को मुवस्सक़-ओ-मोतबर होना तस्लीम किया है। फ़ाज़िल अल्लाम जनाब सैयद सिब्तुल हसन साहब हँसवी ने रिसाला 'अल-जवाद' बनारस, मतबूआ जनवरी १९५३ ईसवी में ज़ियारते नाहिया के मुवस्सक-ओ-मोतबर होने पर बड़ी ज़बरदस्त फ़ाज़ेलाना बहस की है जो नेहायत बेश क़ीमत और क़ाबिले क़द्र है। ख़ुश किस्मती से येह रिसाला इस वक़्त पेश नज़र है। तक़रीर नेहायत मबसूत और मुफ़स्सल है। उस की रोशनी में ये चन्द जुम्ले जो इस मक़सद के लिए काफ़ी हैं सेपुर्दे क़लम किए गए रिसालए मज़कूर में इसका भी तज़केरा है कि इसी ज़ियारते नाहिया का तर्जुमा ताजुलओलमा मौलाना सैयद अली मोहम्मद साहब

ताबसराह ने फिर मौलाना सैयद मोहम्मद रज़ा साहब मरहूम और मौलाना सैयद अली मोहम्मद साहब मरहूम ने फ़र्माया और मिर्ज़ा दबीर (रह) और मीर इश्क (रह) ने इस ज़ियारत का मनज़ूम तर्जुमा किया।

वस्सलामो शकरल्लाहो साय़स्साईना व अमलल आलमीन लहू, हर्रहुस्सैयद मुहम्मद जाफ़र ज़ैदी (अफ़ी अना)

ख़तीब जामा शीआ, क्रिश्न नगर, लाहोर १९६१ ईसवी।

इसके बाद मौलाना सैयद हुसैन मुर्तज़ा तहरीर फ़र्माते हैं कि ''ये मत्न जो अल्लामा मोहम्मद बाक़िर मजलिसी रहमतुल्लाह अलैह की किताब बेहारुल अनवार चाप कम्पानी, तेहरान, ईरान १३०३ हिजरी जिल्द २२ सफ़हा १९७-२०१ व तब्अ मुअस्सिस अल-वफ़ा बेरूत लेबनान १४०३ हिजरी (१९८३ ईसवी), जिल्द ९८ सफ़हा ३१७-३२८ के मुताबिक़ पेश किया जा रहा है।

(क़ारेईन को येह बताना नेहायत ज़रुरी समझते हैं कि इल्मे हदीस में रिवायतुल-हदीस या इल्मुर्रिवाया में जो बेहतरीन और मुवस्सक तरीन तरीक़ा नक़्ले हदीस का है वोह क़राअत बर मशीख़ा है यानी शार्गिद हदीस को उस्ताद के सामने पेश करता है और उस्ताद उसकी तसवीब-ओ-तौसीक़ करता है। और नक़्ले हदीस की इजाज़त मरहमत फ़र्माता है इसी चीज़ को मद्दे नज़र रखते हुए आप मज़ीद फ़र्माते हैं)

रिवायते हदीस के फ़न के मुताबिक़ मैं अपने मशाएख़े हदीस:

(१) उस्तादे मुअज़्ज़म शैख़ुल फ़ोक़हा वल मोहद्देसीन हज़रत आयतुल्लाह सैयद शहाबुद्दीन नजफ़ी मरअशी (रहमतुल्लाह अलैह)

(२) उस्तादे मुकर्रम शैख़ुल हदीस हज़रत आयतुल्लाह सैयद मोहम्मद रज़ा गुलपायगानी (रहमतुल्लाह अलैह)

(३) उस्तादुल हदीस हज़रत आयतुल्लाह मोहद्दिस ज़ादए क़ुम्मी फ़र्ज़न्द हज़रत आयतुल्लाह शैख़ अब्बास क़ुम्मी (रहमतुल्लाह अलैह) साहिबे मफ़ातीहुल जिनान

(४) उस्तादुल हदीस वलफ़िक़्ह हज़रत आयतुल्लाह शैख़ मोहम्मद रज़ा तबसी नजफ़ी (रहमतुल्लाह अलैह)

(५) उस्तादे मुअज़्ज़म-ओ-मुकर्रम आयतुल्लाह सैयद इब्ने हसन नजफ़ी(मद्द ज़िल्लहुलआली)

नीज़ अपने वालिद मरहूम अल्लामा मुहक़्क़िक़ हज़रत आयतुल्लाह हाज सैयद मुर्तज़ा हुसैन सद्रुल्लाफ़ाज़िल (रहमतुल्लाह अलैह) के ज़रीए उन हज़रात के सिलसिल रिवायत के वास्तों से हज़रत इमामे ज़माना अज्जलल्लाहो तआला फ़रजहुश्शरीफ़ से रिवायत का शरफ़ हासिल करते हुए हमवतनाने अज़ीज के हुज़ूर नज़्र कर रहा हूँ...'' सैयद हुसैन मुर्तज़ा नक़वी नज़ील शहरे मुक़द्दस क़ुम, ईरान।

मुन्दर्जा बाला मुक़द्दमा और तआरुफ़ से बहद्दे केफ़ायत वाज़ेह है के ज़ियारते नाहिया मुक़द्देसा नेहायत मोतबर ज़ियारत है जिसे न सिर्फ़ ईरान-ओ-इराक़ के बुज़ुर्ग मर्तबा ओलमा ने नक़्ल किया है बल्कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के ओलमाए केराम ने भी इस पर काफ़ी काम किया है क्योंकि ज़ियारत ख़ासी तूलानी है, इसी लिए इख़्तेसार को मद्दे नज़र रखते हुए हम अपनी गुफ़्तुगू का आग़ाज़ उन फ़िक़रों से करेंगे जो हज़रत सैयदुश्शोहदा अलैहिस्सलाम से मुतअल्लिक़ हैं। और इब्तेदाई जुम्लों को सर्फ़े नज़र करते हैं। ये इस लिए नहीं कि (मआज़ल्लाह) इब्तेदाई जुम्लों की कोई अहमियत नहीं बल्कि सिर्फ़ इख़्तेसार की ख़ातिर और क्योंकि येह शुमारा हज़रत सैयदुश्शोहदा अलैहिस्सलाम से मख़सूस है।

ज़ियारत का आगाज़ अंबियाए उज़्ज़ाम और मुर्सलीने कराम और पंजतने पाक (अलैहिमुस्सलात-ओ-सलाम) पर सलाम से होता है। फिर इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम फ़र्माते हैं:

अस्सालामो अलल हुसैन अल्लज़ी समेअत नफ़्सहू बेमुहजतेही

सलाम हो हुसैन अलैहिस्सलाम पर जिन्होंने इन्तेहाई ख़ुलूस से राहे ख़ुदा में जान निसार कर दी।

ज़ियारत के इस जुम्ले में तीन अहम अल्फ़ाज़ हैं। समेआ, नफ़्स और मुहजता (मुहजा)। समेआ के मानी हैं फ़य्याज़ और सख़ी होना। दीने इस्लाम में, बिल्ख़ुसूस मज़हबे तशीअ में सख़ावत-ओ-समाहत पर काफ़ी

ताकीद की गई है। अ़ल्लामा मोहम्मद बाक़िर मजलिसी (रिज़वानुल्लाह अलैह) ने बेहारुल अनवार, जिल्द ७१, सफ़हा ३५० में एक मुकम्मल बाब, बाबुस्सख़ा वस्समाआ दर्ज किया है जिस में आपने बाईस हदीसों से ज़्यादा हदीसें नक़्ल की हैं। मसलन,

क़ाला अमीरुल मोमेनीन अ़लैहिस्सलाम लिलहसन अ़लैहिस्सलाम: या बुनैया मा-अस्समाहतो? क़ाला (अ.स.): अलबज़्लो फ़िलउम्रे वलयुस्र

मौलाए काएनात ने अपने फ़र्ज़न्दे अर्जुमन्द इमाम हसन मुज्तबा अ़लैहिस्सलाम से सवाल किया: बेटा समाहा क्या है? आपने जवाब में फ़र्माया: मुश्केलात और आसानी दोनों में दस्त बाज़ू सख़ी होना।

(मआनिल अख़बार, सफ़हा २५५)

रावी कहता है कि मैंने इमाम रज़ा अ़लैहिस्सलाम से सुना कि आप (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़र्माया:

अस्सख़ीयो क़रीबुन मिनल्लाहे, मिनलजन्नते, क़रीबुन मिनन्नासे वलबख़ीलो बईदुन मिनल्लाहे बईदुन मिनलजन्नते बईदुन मिनन्नास

सख़ी अल्लाह, जन्नत और अवामुन्नास से नज़दीक होता है लेकिन बख़ील और कंजूस, अल्लाह, जन्नत और अवामुन्नास से दूर होता है।

(उयून अख़बारिर्रज़ा, जिल्द २, सफ़हा १२)

दूसरा लफ़्ज़ है नफ़्स। नफ़्स इन्सान की उस हक़ीक़त को कहते हैं कि जिसकी बेना पर इन्सान की ''इन्नीयत'' का दार-ओ-मदार है। जब हम कहते हैं 'मैं' तो इस मैं से हमारा नफ़्स मुराद है।

बुज़ुर्ग मर्तबा आलिम इब्ने बाबूया अलकुम्मी अलमअरुफ़ ब शेख़ सदूक़ (अलैहिर्रहमा) अपनी किताब 'रेसालतुल अक़ाएद' में इस तरह क़लमबन्द करते हैं:

एतेक़ादोना फ़िन्नुफूसे अन्नहलअरवाहुल्लती बेहल हयात

नफ़्स के मुताल्लिक़ हमारा येह अक़ीदा है कि नुफ़ूस उन अरवाह को कहते हैं जिनकी बेना पर हयात है।

(बेहारुल अनवार जिल्द ६१, सफ़हा ७८)

चूँकि मज़मून के दामन में गुन्जाइश नहीं, लेहाज़ा जो हज़रात इस मौज़ूअ पर मज़ीद मुतालेआ करना चाहते हैं वोह बेहारुल अनवार जिल्द ६१ के मुख़तलिफ़ अबवाब की तरफ़ रुजूअ कर सकते हैं। जैसे **बाबो हक़ीक़तुन्नफ़्स वर्रूह व अहवालहुमा, बाबो क़वीयुन्नफ़्स व मशाएरहा मिनल हवासिज़्ज़ाहेरते वल बातेन व साएरे क़वीयल बदनीया, बाबो मरातिबुन्नफ़्से वअ़दल एतेमाद अ़लैहा व मा ज़ीनतहा व ज़ैयिन लहा वग़ैरह।** ख़ुलासा येह कि जब हम कहते हैं नफ़्स तो उससे मुराद हमारी पूरी जान है।

तीसरा लफ़्ज़ है ''मुह्जा'' यानी 'ख़ून' या 'दिल का ख़ून' या ज़िन्दगी या 'रूह'। अब अगर ज़ियारत के जुम्ले पर ग़ौर करें, इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने इस्लाम की राह में सख़ावत के जिस जज़्बे का मुज़ाहेरा किया वोह बेनज़ीर, बेमिसाल ख़ुद आपकी ज़ात ''**हुसैनुम्मिन्नी व अना मिनल हुसैन**'' की फ़ज़ीलत की हामिल है और एक क़ुर्बानी ही काफ़ी होती। लेकिन आपने समाहत-ओ-सख़ावत को एक नया मानी-ओ-मफ़हूम अता किया है। और दुनिया को दिखा दिया कि देखो जब हम अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम ख़ुदा की राह में सख़ावत-ओ-समाहत का मुज़ाहेरा करते हैं तो न सिर्फ़ अपनी जान क़ुर्बान करते हैं बल्कि बराबर का भाई, जवान बेटा, नौजवान भतीजा हत्ता कि अपने शशमाहे को भी फ़ी सबीलिल्लाह क़ुर्बान कर देते हैं। बीबियों की बेरेदाई और दरबदर फिराया जाना भी बर्दाश्त किया और येह सब सिर्फ़ इसलिए कि दीने मुहम्मदी ता रोज़े क़ेयामत बाक़ी रहे।

अ़स्सलामो अ़ला मन अताअल्लाह फ़ी सिर्रेही व अलानीयतेही

सलाम हो उस पर जिसने ख़लवत-ओ-जलवत में छिपकर और आश्कारा अल्लाह की इताअ़त-ओ-बन्दगी की।

मुन्दर्जा बाला फ़िक़्रा वाज़ेह कर रहा है कि इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम वोह थे जो इताअ़त-ओ-फ़र्मां-बरदारी के पैकर थे। यक़ीनन येह इताअ़त-ओ-फ़र्मांबरदारी ही इन्सान की ख़िलक़त का मक़सद-ओ-हदफ़ है लेकिन 'अक्सरोहुम ला याक़ेलून'। आइए अह्लेबैत

अ़लैहिमुस्सलाम के दर पर चलें और उन्हीं से इसकी अहम्मीयत दर्याफ़्त करें।

अ. क्या ख़ुदावन्द आ़लम हमारी इताअ़त का मोहताज है? इस सवाल के जवाब में जब हमने बाबे मदीनतुलइल्म पर दस्तक दी तो सदा आई:

ख़लक़लख़ल्क़ हीना ख़लक़हुम ग़नीयन अ़न ताअ़तेहिम आमेनन मिन मासियतेहिम लेअन्नहू ला तज़ुर्रोहू मासियतो मन अ़साहो वला तनफ़ओहू ताअ़तो मन अताअ़हू।

उसने मख़लूक़ात को पैदा किया जबकि वोह उनकी इताअ़त का मोहताज नहीं था और उनकी नाफ़रमानी और मासियत से महफ़ूज़ था क्योंकि किसी नाफ़रमान की नाफ़रमानी (नाफ़र्मानी) उसे ज़रर-ओ-नुक़सान नहीं पहुँचाती और फ़र्मांबरदार की फ़र्मांबरदारी उसे फ़ाएदा नहीं पहुँचाती।

(नहजुल बलाग़ा, ख़ुत्बा १९३)

ब. अगर ख़ुदा हमारी इताअ़त का मोहताज नहीं है तो फिर उसने हमें अपनी इताअ़त का हुक्म क्यों दिया? मौलाए काएनात अमीरुल मोमेनीन अ़ली इब्ने अबीतालिब अ़लैहिस्सलाम फ़र्माते हैं:

इ़ज़ा अख़ज़्ता नफ़्सका बेताअ़तिल्लाह अकरमतहा व एनिब्तज़लतहा फ़ी मआ़सीहे अहन्तहा

जब तुम नफ़्स को इताअ़त-ओ-फ़र्मांबरदारिए परवरदिगार पर आमादा करते हो तो तुमने उसका (नफ़्स का) एकराम-ओ-एहतेराम किया और जब तुम ख़ुदा की नाफ़र्मानी करते हो तो तुम ने अपने नफ़्स को ज़लील-ओ-रुस्वा किया।

(शर्हे नहजुल बलाग़ा, इब्ने अबिल हदीद, जिल्द १०, सफ़हा १८९)

तो मालूम येह हुआ कि जितना इन्सान ख़ुदा की इताअ़त-ओ-फ़र्मांबरदारी करता है उतना ज़्यादा उसका नफ़्स मोहतरम-ओ-मुकर्रम होता है और जितना ज़्यादा मासियत-ओ-नाफ़र्मानी करता है उतना ही ज़लील, ख़ार-ओ-रुस्वा होता है।

स. अक्सर ऐसा होता है कि दोस्त, अहबाब, अक़रेबा, अइज़्ज़ा, रस्म-ओ-रवाज की बेना पर हमको ख़ुदा की नाफ़र्मानी करनी पड़ती है या फिर ऐसे काम करने पड़ते हैं जो अहकामे शरीअत के मुताबिक़ नहीं होते। ऐसी सूरत में क्या करें?

मौलाए काएनात हज़रत अ़ली इब्ने अबीतालिब अ़लैहिस्सलाम इस सवाल का जवाब इस तरह देते हैं:

दआ़कुम रब्बोकुम सुब्हानहू फ़ नफ़रतुम व वल्लैतुम व दआ़कुमुश्शैतानो फ़स्तजब्तुम व अक़बल्तुम दआ़कुमुल्लाहो सुब्हानहू इला दारिल बक़ाए व क़रारतिल ख़ुलूदे वन्नअ़माए वलमुजावरतिल अम्बियाए वस्सोअ़दाए, फ़अ़सैतुम व आरज़तुम व दअ़तकुमुद्दुनिया इला क़रारतिश्शक़ाए व महल्लिलफ़नाए व अनवाइल बलाए वल अ़नाए फ़अतअ़तुम व बादरतुम व असरअ़तुम

तुम्हारा परवरदिगार तुम्हें पुकारता है लेकिन तुमने क़ुबूल नहीं किया और अपनी पुश्त दिखाई। मगर जब शैतान ने तुम्हें दअ़वत दी तुमने असकी दअ़वत क़ुबूल की और उसका इस्तेक़बाल किया। तुम्हारा परवरदिगार तुम्हें हमेशा रहने वाले घर और ख़ुलूद-ओ-नेअ़मतों की मंज़िल और अम्बिया और सआ़दतमंदों की मुजावरत-ओ-पड़ोस की तरफ़ दअ़वत देता है लेकिन दुनिया तुम्हें बदबख़्ती-ओ-शक़ा, महल्ले फ़ना और मुख़्तलिफ़ बलाओं और मुसीबतों की तरफ़ पुकारती है और तुम उसकी इताअ़त करते हो, उसकी तरफ़ बढ़ते हो और वोह भी बड़ी तेज़ी के साथ।

(ग़ोररुल हेकम व दोररुल कलिम)

येह हदीस वाज़ेह करती है कि:

ला ताअ़ता लेमख़्लूक़िन फ़ी मासियतिल्लाहे

अगर अल्लाह की नाफ़र्मानी हो तो ऐसी सूरत में मख़्लूक़ात और बन्दों की इताअ़त वाजिब नहीं चाहे वोह दोस्त-ओ-अहबाब हों या अइज़्ज़ा-ओ-अक़रेबा।

वाक़ए करबला आईनए हक़-ओ-बातिल

फ़रमाने ख़ुदा वन्दी है

इन्ना हदैनास्सबील, इम्मा शाकिरौं व इम्मा कफ़ूरा

हमने इस (इन्सान) को सही रास्ते की हिदायत कर दी है। चाहे (इसे एख़्तियार करके) शुक्र गुज़ार बने या (इसे छोड़कर) कुफ़्र एख़्तियार करे।

अल्लाह ने हर इन्सान को अक़्ल अता की है जिसकी बेना पर वोह हक़-ओ-बातिल में तमीज़ करता है। और हक़ की राह एख़्तियार करके उस बलंदी पर पहुँच जाता है कि उसके किरदार-ओ-अमल में मासूम रहबरों के औसाफ़-ओ-ख़साएस का अक्स झलकता है। इसके बर ख़िलाफ़ अगर इन्सान बातिल की पैरवी करे तो लाख इल्म-ओ-दानिश और जाह-ओ-मन्सब के, ज़िल्लत-ओ-रुसवाई की खाईं में गिर पड़ता है।

येह वाक़ए करबला को अपनी इनफ़ेरादियत है जहाँ दोनों क़िस्म के किरदार नज़र आते हैं, जब आफ़ताबे इमामत ने ज़मीन पर अपनी किरनें बिखेरी तो ख़ाक नशीन लाल-ओ-गोहर चमक उठे और उसी के साथ-साथ वोह इन्सान नुमा दरिंदों के चहेरे भी निगाहों में आ गए जिन्होंने अपने चेहरों पर ज़ुल्मत की नक़ाब डाल रखी थी। तम्हीदे करबला से दो मुतज़ाद किरदार आपकी ख़िदमत में पेश करते हैं।

जनाब क़ैस इब्ने मुसहेर सैदावी

आपका इस्मे गेरामी क़ैस बिन मुसहर बिन ख़ालिद सैदावी था। (सैदा क़बीला-ए-असद की एक शाख़ का नाम है) मुक़द्दमा-ए-करबला के शोहदा में आप चौथे शहीद हैं।

जनाब क़ैस बनू सैद में बड़े मर्दे शरीफ़ और बहादुर-ओ-मुख़लिस-ओ-मुहिब्बे अह्लेबैत थे। मुआविया के मरने के बाद शीअयाने कूफ़ा के एक मुख़्तसर गिरोह ने चंद एक ख़ुतूत ख़िदमते इमामे हुसैन अलैहिस्सलाम में इरसाल किए, जिनमें एक ख़त जनाब क़ैस के हमराह भेजा गया। आप अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह अरजी के साथ आज़िमे सफ़र हुए और मक्के में ख़िदमते इमाम अलैहिस्सलाम में शरफ़याब हुए।

ख़ुशनूदिए इमाम (अ.स.) में क़ैस की जाँफ़िशानी

हज़रत अलैहिस्सलाम ने ख़ुतूत के जवाब में जनाब मुस्लिम अलैहिस्सलाम को बुलाया और कूफ़ा रवाना किया। क़ैस जनाब मुस्लिम अलैहिस्सलाम के हमरकाब होकर कूफ़ा वारिद हुए। जब जनाब मुस्लिम अलैहिस्सलाम ने इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की बैअत के लिए अह्ले कूफ़ा का इजतेमा-ओ-इन्हेमाक देखा तो जनाब क़ैस के ज़रीए हज़रत अलैहिस्सलाम को इसकी ख़बर भेजी और आबिसे शाकेरी और उनके ग़ुलाम शौज़ब को भी जनाब क़ैस के साथ रवाना किया। येह ख़त जनाब मुस्लिम ने अपनी शहादत से सत्ताईस रोज़ क़ब्ल भेजा था।

क़ैस ख़िदमते इमाम (अ.स.) में बारियाब हुए और हज़रत (अ.स.) के साथ आज़िमे कूफ़ा हुए। अस्नाए राह में बत्ने रम्मा के मक़ामे हाजिज़ पहुँचे तो एक नविश्ता जनाब मुस्लिम और कूफ़ा के सरकरदा शीओं को तहरीर फ़रमाया। येह ख़त जनाब क़ैस को देकर कूफ़ा रवाना किया।

जनाब क़ैस का आख़ेरी सफ़र

उधर इब्ने ज़िआद ने मक़ामे ख़फ़ान से क़ादेसीया तक, क़तफ़ताना से तअ़ला तक हसीन बिन नुमैर की सरदारी में फ़ौज का पहरा बिठा दिया। जनाब क़ैस ने दौराने सफ़र क़ादेसीया में क़याम किया, जहाँ हुसैन बिन नुमैर ने आपको गिरफ़तार कर लिया। इससे पहले कि वोह आप की तलाशी लेते और वोह नामा दुश्मन के हाथ लगता और वोह उन सरकरदा शीअ़ों के नाम जान लेते जिन के नाम येह ख़त था आप ने वोह ख़त चाक चाक कर दिया (और कुछ रवायतों की बेना पर उस के बाद उसे निगल लिया)।

जनाब क़ैस इब्ने ज़ियाद के सामने

आप को गिरफ़तार करके इब्ने ज़ियाद के सामने पेश किया गया। उसने सख़्ती से इस तरह पूछ ताछ की।

इब्ने ज़ियाद : इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम का ख़त कहाँ है?

क़ैस : मैंने उसे चाक चाक कर डाला।

इब्ने ज़ियाद : क्यों फाड़ डाला?

क़ैस : ताकि तू उसके मज़मून से मुत्तला न हो सके।

इब्ने ज़ियाद : ख़त किन लोगों के नाम था?

क़ैस : जिन लोगों के नाम ख़त था, वोह तुझे क्यों बताऊँ।

इब्ने ज़ियाद येह सुन कर जल भुन गया। उसने आप को इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की शान में गुस्ताख़ियाँ करने का हुक्म दिया। लोग जमा किये गए और क़ैस मिम्बर पर गए।

जनाब क़ैस का इस्तेक़लाल और जुरअतमंदी

क़ैस ने पहले तो हम्दे बारी-ए-तआ़ला की और मोहम्मद व आले मोहम्मद अ़लैहिमुस्सलाम पर दुरूद भेजा, फिर इस तरह इरशाद फ़रमाया।

''ऐ गरोहे मरदुम! हुसैन इब्ने अ़ली अ़लैहिस्सलाम ख़ल्क़े अल्लाह की बेहतरीन फ़र्द हैं, फ़ातेमा बिन्ते रसूलुल्लाह के फ़र्ज़ंद हैं। मैं उन (अ.स.) का क़ासिद बनकर तुम लोगों के पास आया हूँ। मैं हज़रत (अ.स.) को मक़ामे हाजिज़ में छोड़ कर आया हूँ। इस लिये कि तुम लोग हज़रत (अ.स.) की आवाज़ पर लब्बैक कहो। इसके बाद इब्ने ज़ियाद और उसके बाप पर लअ़नत की और अमीरुलमोमेनीन हज़रत अ़ली इब्ने अबी तालिब अ़लैहिस्सलाम पर दुरूद भेजा।''

जनाब क़ैस की शहादत

इब्ने ज़ियाद येह देख कर सीख़ पा हो गया और हुक्म दिया के आप को दारुल अमारा की छत पर ले जाओ और हाथों को पसे-पुश्त बाँध कर ज़मीन पर फेंक दो। आप को बालाए क़स्र लाया गया और हाथ पावँ बाँध कर ज़मीन पर फेंक दिया गया जिससे आप की हड्डियाँ चूर चूर हो गयीं, अभी आप तड़प ही रहे थे कि अ़ब्दुर्रहमान बिन उ़मैर मलऊ़न ने आप का सर काट लिया।

जनाब क़ैस को इमामे वक़्त (अ.स.) की दाद-ओ-तहसीन

जब जनाब क़ैस की शहादत की ख़बर हज़रत (अ.स.) तक पहुँची तो आप (अ.स.) मक़ामे अज़ीबुल हिजानात में थे। ख़बरे शहादत सुनकर आप की आँखों मे आँसू आ गये और फ़रमाया:

मिनहुम क़ज़ा नहबहू व मिनहुम मँय्यन्तज़िर

''इन में से बाज़ वोह हैं, जिन्होंने अपनी उम्र पूरी कर ली और बाज़ वोह हैं जो मुन्तज़िर हैं।''

इस के बाद फ़रमाया:

''हमारी और उन लोगों की मन्ज़िल अल्लाह जन्नत क़रार दे, हमको और उन लोगों को अपने महल्ले रहमत में जगह दे और ज़ख़ीरा

किये हुए मरग़ूब सवाब के मक़ाम पर जमा करो।''

जनाब क़ैस एक मिसाली किरदार

जनाब क़ैस कितने शुजा-ओ-बहादुर और जरी इन्सान थे, इमामे वक़्त (अ.स.) के कैसे मुती-ओ-फ़रमा बरदार थे कि इब्ने ज़ियाद जैसे ज़ालिम-ओ-जाबिर के जाह-ओ-जलाल की बिल्कुल परवाह न की, और इमामे वक़्त (अ.स.) के राज़ को उस मलऊन पर अफ़शाँ न किया और न उन अशराफ़े शीआ के अस्मा ज़ाहिर किए जिन के नाम येह ख़त लाए थे। मिम्बर पर जाकर हक़्के मवद्दत अदा किया और जिस ख़िदमत के लिए मअमूर थे उस को बा हुस्न-ओ-ख़ूबी अन्जाम दिया और बजाए शाने हज़रत में कोई गुस्ताख़ी करने के ख़ुद इब्ने ज़ियाद और उस के बाप पर सब्ब-ओ-शतम की हालाँकि बा ख़बर थे कि इस के बाद उन के साथ क्या सुलूक किया जाएगा।

किरदारे बातिल

बातिल की पैरवी करने वाले भी बातिल शुमार होते हैं। चाहे वोह इल्म-ओ-दानिश की आ़ला मंज़िलों को भी क्यों न तै कर लें। और ऐसे ही अरबाबे इल्म-ओ-दानिश का वोह तबक़ा है जिसने मौक़ा ब मौक़ा बातिल के हाथों अपनी ज़बान-ओ-क़लम बेचे हैं। येह उम्मते इस्लामिया की बदनसीबी है कि येह तबक़ा हमेशा सरगर्मे अमल रहा है। चूँकि इस तबक़े में मौजूद अफ़राद इल्म-ओ-दानिश की बलंदी पर फ़ाएज़ रहे हैं लेहाज़ा इन के क़ौल-ओ-फ़ेल से तारीख़े इस्लाम पर दूर-रस असरात मुरत्तब हुए हैं। ऐसे ही एक शख़्स का तआरुफ़ पेश करते हैं।

क़ाज़ी शरीह

नाम शरीह बिन हारिसे किन्दी, अशअ़स बिन क़ैस का हम-क़बीला, नेहायत चालाक-ओ-मुदब्बिर, ख़ुश तबअ़, इल्म-ओ-अदब में शोहरए आफ़ाक़ और शाएरी में वोह कमाल था कि इस का कलाम ज़रबुल मसल समझा जाता था। हयाते सरवरे काएनात सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम में जवान और बालिग़ था लेकिन दीदारे फ़रहते आसार से आँखें रोशन नहीं की थीं। बावजूदे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम को देखा भी नहीं था फिर भी फ़ेहरिस्ते सहाबा में दाख़िल कर दिया गया।

क़ाज़ी शरीह वाक़ए करबला के पहले

ख़लीफ़ए दुव्वुम के दौर में कूफ़े का क़ाज़ी मुक़र्रर किया गया। दौरे यज़ीदे पलीद तक मुसलसल इसी ओह्दे पर बरक़रार रहा, साठ बरस तक क़ज़ावत की। ज़ियाद बिन अबीह जो चालाकी और मक्कारी में क़ाज़ी शरीह से कई क़दम आगे था उस ने किसी बद उनवानी पर कूफ़े से बसरा बदल दिया। एक साल बसरा में रहा जब देख़ा के बग़ैर शरीह के काम नहीं चलता तो वापस बुला लिया।

क़ाज़ी और तम्हीदे करबला

जब इब्ने ज़ियाद कूफ़ा वारिद हुआ और चाहा कि लोगों को यज़ीदे पलीद की इताअ़त पर मजबूर करे और नुसरते इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम से रोके, इस ने क़ाज़ी शरीह को हुक्म दिया कि तरफ़दाराने इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम को सख़्त से सख़्त सज़ाएँ दी जाएँ ताकि वोह ख़ुद ब ख़ुद मुआवनते ख़ानदाने रिसालत से बाज़ आ जाएँ। क़ाज़ी ने इस हुक्म पर दिल-ओ-जान से अ़मल किया बल्कि वोह इस से भी आगे बढ़ गया और वोह सज़ाएँ दीं कि अल्लाह की पनाह।

येह वही क़ाज़ी शरीह है जिस ने चंद रोज़ पहले तक जनाब मुसलिम कि हिमायत की थी और उनके दोनों फ़र्ज़ंद जनाब मोहम्मद और जनाब इब्राहीम को अपने घर में पनाह दी थी मगर हालात के बदलते ही उस ने भी अपना रंग बदला और अपने बेटे असद के हमराह बेरूने कूफ़ा क़ाफ़ेले के बहाने भेज दिया ताकि

इब्ने ज़ियाद की क़ुरबत पर आँच न आए। अगर चाहता तो किसी मअक़ूल तरीक़े से किसी ख़िदमतगार के ज़रीए इन यतीमाने बेवतन की हिफ़ाज़त करता मगर दिरहम-ओ-दीनार ने क़ाज़ी साहब की आँखों को चकाचौंध कर रखा था और हिर्स-ओ-हवस ने दिल पर पर्दे डाल दिए थे।

क़ाज़ी साहब की धोके बाज़ी

इब्ने ज़ियाद को मालूम हुआ के जनाब हानी ने जनाब मुस्लिम को पनाह दे रखी है उस ने इन्हें इस जुर्म में शहीद कर दिया। जब उन के क़बीले मज़हज को इस की ख़बर हुई तो उमर बिन हज्जाज (जो जनाब हानी का ख़ुस्र था) ने चार हज़ार सिपाहियों के साथ दारुल अमारा को घेर लिया। इब्ने ज़ियाद येह देख कर घबरा गया, इस लिये के उस वक़्त दारुल अमारा में गिनती के सिपाही मौजूद थे। इस ने ऐसे कड़े वक़्त में क़ाज़ी साहब कि मदद ली और येह दारुल अमारा कि छत पर आए और बआवाज़े शीरीं कहने लगे: ऐ बंदगाने ख़ुदा! हानी के साथ कोई बदसुलूकी नहीं हुई है और न कोई उन को आँख भर कर देख सकता है। बाज़ लोगों नें कहा येह बूढ़ा क़ाबिले एतेबार नहीं है फ़रेब का जाल फैला रहा है। इसकी दग़ा बाज़ी में न आओ। लेकिन अवाम इसकी सफ़ेद और लम्बी दाढ़ी के ताने बाने में फँस गई। और मजमअ मुत्मइन होकर मुंतशिर हो गया।

क़त्ले हुसैन अ़लैहिस्सलाम पर तारीख़ साज़ फ़त्वा

येह वोह फ़त्वा है जिसने तारीख़े इस्लाम की चूलें हिला दीं। और अहलेबैत अ़लैहिमुस्सलाम पर ज़ुल्म का एक मुस्तक़िल दरवाज़ा खोल दिया। मौजूदा दौर में अ़ज़ाए सैयदुश्शोहदा के ख़िलाफ़ उठने वाले तमाम फ़त्वों की तान यहीं आकर टूटती है।

येह फ़त्वा क़ाज़ी शरीह ने बड़े एहतेमाम से दिया और क़त्ले हुसैन अ़लैहिस्सलाम के लिए बड़ी दक़ीक़ मंसूबा बंदी की। वोह इस तरह कि पहले इब्ने ज़ियाद को ख़बरदार किया कि अहले कूफ़ा की लअ़नत (लानत) और मलामत से बचने के लिए हमें क़त्ले हुसैन (अ.स.) में उ़लमा, फ़ोज़ला, आबिद-ओ-ज़ाहिद, मुत्तक़ी-ओ-परहेज़गार, हाफ़िज़े क़ुरआन और इल्मे हदीस जानने वाले अफ़राद को शरीक करना होगा और एक अ़हदनामे पर इन सबकी दस्तख़त ले ली जाए। और अगर कोई बैअ़ते यज़ीद से इन्कार करे, या मुन्हरिफ़ हो तो वोह बाग़ी और वाजिबुल क़त्ल इसलिए समझा जाएगा के हज़ारहा अक़्लमंद और साहेबे इ़ल्म हज़रात ने यज़ीद की बैअ़त कर ली है। येह अ़हदनामा हमारे लिए शरई हिसार का काम देगा। चुनान्चे अ़हदनामा लिखा गया। उ़मरेसाद जैसे अफ़राद ने ब रग़बत तमाम, बअ़ज़ों ने दबे दबाए और बअ़ज़ों ने जान के ख़ौफ़ से ग़र्ज़ेकि सबने एक के बाद दीगरे दस्तख़त कर दी। क़ाज़ी साहब जो सबके अफ़सरे आ़ला थे वोह भी दाख़िले हलफ़नामा हुए। यही वोह अ़हदनामा है जो यज़ीदियत की नाकाम शह्र पनाह बना हुआ है।

क़ाज़ी साहब का अंजाम

ज़माने ने फिर करवट ली, मगर अबकी वोह क़ाज़ी साहब के ख़िलाफ़ था। जिसके आगे उनकी चालाकी-ओ-मक्कारी का कुछ ज़ोर न चल सका। जनाब मुख़्तार ने ख़ुरूज किया। और चुन चुन कर क़ातिलाने इमाम अ़लैहिस्सलाम को तहे तेग़ किया। क़ाज़ी साहब अपने तहख़ाने में गिरफ़्तार कर लिए गए और वहीं दारोग़ए जहन्नम के हवाले कर दिए गए।

बारगाहे ख़ुदावन्दी में दुआ है कि हमें क़ैस जैसा किरदार अपनाने की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाए और अपनी आख़ेरी हुज्जत अ़लैहिस्सलाम के ज़हूर में तअ़जील फ़रमाए। ताकि वोह मज़लूमे करबला अ़लैहिस्सलाम का हक़ीक़ी इन्तेक़ाम लें और क़ाज़ी शरीह जैसे नापाक अफ़राद से इस ज़मीन को पाक कर दें। आमीन.

सफ़ह न. ३० का बाकी

अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम थे और रूहे तब्लीग़ाते रिसालत थे और जो मक़सदे इस्लाम के मुहाफ़िज़ थे। आपकी वोह ज़ात थी जो अपने जद के रम्ज़े रुमूज़े तब्लीग़ाते शरीअते इस्लामी पर सियासत की गर्द नहीं बैठने दे रहे थे। यही वज्ह थी कि यज़ीद ने तख़्ते हुकूमत पर बैठते ही हुसैन अ़लैहिस्सलाम से बैअ़त का मुतालेबा किया और अपनी ताक़त-ओ-हुकूमत की बेना पर इस ज़ोमे नाक़िस के साथ कि अगर हुसैन अ़लैहिस्सलाम बैअ़त से इनकार करें तो उन का सर क़लम कर दो। यानी एक तरफ़ तलवार, गर्दन ज़दनी, क़त्ल-ओ-ग़ारत की धमकियाँ थी तो दूसरी तरफ़ सब्र, तहम्मुल, सुल्ह-ओ-आश्ती और इस्लाम में खूँरेज़ी से परहेज़ करने वाले नक़ीब इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम थे। एक तरफ़ फ़लसफ़ा-ए-इस्लामी था जो कह रहा था बेगुनाह को क़त्ल करना तो दर किनार परेशान भी मत करो। दूसरी तरफ़ ख़ूँरेज़ी ही से इस्लामी हुकूमत चल सकती है, का सियासी हर्बा अपने उसूल की तदवीन कर रहा था। यज़ीद की लगाई आग आज भी इराक़ की सर. जमीन पर फैली हुई है। हर रोज़ सुब्ह को यही ख़बर आती है आज दो सौ मज़दूर अपने पेट की रोटी कमाने के लिए किसी इमारत की तामीर में मौजूद थे, बमों से उड़ा दिए गए। आज बस से उतार कर औरतों को अलग कर दिया और मर्दों को पकड़ ले गए और उन्हें तहे तेग़ कर दिया। ग़र्ज़ेकि इराक़ की सुब्ह होती है तो मज़लूम, बेकसों, मजबूरों, फ़ाक़ाकशों के ख़ून से नहाई हुई सुब्ह होती है। और शाम आती है तो मालूम नहीं कितनी बेवाओं, यतीमों, ज़ईफ़ों की बिलकती, रोती, सर पीटती, चीख़ती, काँपती, डरती, लरज़ती, थरथराती सदाओं की चादर ओढ़कर आती है।

येह कैसी खूँपोश सुब्ह है, येह कैसी मौत के सन्नाटे की तरह डरावनी शाम है जो तुलूए आफ़ताब से गुरूबे आफ़ताब तक की ख़ूँचकाँ दास्तान लिख रही है। येह यज़ीदियों की लाई हुई शाम के आलाम-ओ-मसाएब हमें कब तक शामे ग़रीबाँ की याद दिला कर रुलाती रहेंगी। हम हर रोज़ कहते हैं जब येह शाम ऐसी है तो शामे ग़रीबाँ की शाम कैसी होगी। इसलिए कि इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने फ़र्माया था कि हमारे मसाएब का मुक़ाबला-ओ-मुक़ाएसा किसी मुसीबत से न करना, अब ऐसी मुसीबतें फिर न आएँगी।

ऐ मेरे, हमारे, हम सब के हुसैन, अहिंसा के बादशाह हुसैन, इन्सानियत के ताजदार हुसैन, प्यासे हुसैन, साबिर हुसैन, ख़ातूने जन्नत के दिल का चैन हुसैन, नाना रसूले ज़मन की आँखों के नूर हुसैन शीअ़याने अ़ली की कश्ती भंवर में है। आपको बाज़ूए अब्बास का वास्ता इस कश्ती को तूफ़ान से निकाल कर इसको चैन और राहत के साहिल पर ले आइए। येह तूफ़ान सुकून पज़ीर तब होगा जब लोग हुसैनियत और आपके मिशन को समझेंगे और उस पर अ़मल करेंगे। राहत की साँस तो वहीं ली जा सकेगी जहाँ इमामत की ठंडी छावँ होगी। आज की दुनिया में चन्द लम्हे सुकून के मिल जाएँ, ग़नीमत है। आइए उस दिन को याद करें जब दीन अपने नुक़्तए कमाल को पहुँचा था और नेअ़मतहाए आसमानी पर इतमाम की मोहर लगी थी और उस नफ़्से मुतमइन्ना के सजदए आख़िर को याद करें जिस वक़्त रिज़ायते परवरदिगार का एलान हुआ था। ख़ूने नाहक़ राएगाँ न होगा। अभी क़ुदरत ने फ़र्ज़न्दे हुसैन अ़लैहिस्सलाम, हुज्जत इब्निल हसन-अल-असकरी अलैहिस्सलाम के ज़रीए इस ज़मीन और आसमान को क़ाएम रखा है। वोह ख़ुरशीदे हिदायत परदए ग़ैब में है और ख़ुदावन्दे मुतआल का क़ौल है कि वोह वक़्ते मालूम पर ज़ाहिर होगा। ख़ुदा अपने वादे के ख़ेलाफ़ नहीं जाएगा। उसका वादा पूरा होकर रहेगा। उस वक़्त हुसैनियत का मिशन बरूए कार आएगा और परचमे हक़ के साए में येह दुनिया अद्ल-ओ-इन्साफ़ से भर जाएगी।

ऐ अल्लाह तआ़ला मेरे/हमारे इमाम के ज़हूर में ताजील फ़र्मा। आमीन

अलमुन्तज़र

सिलसिलए दुरूस

अजीज़ गेरामी! सलाम-ओ-रहमत

ख़ुदावन्द करीम की एनायतों और हज़रत हुज्जत अलैहिस्सलाम की नवाज़िशों के ज़ेरे साया आप बख़ैर होंगे। ख़ुदावन्द आलम हज़रत हुज्जत के ज़हूर में तअजील फ़र्माए और हम सबको हज़रत के ख़ादिमों में शुमार फ़र्माए। आमीन.

हज़रत हुज्जत अलैहिस्सलाम की बाबरकत ज़ात से मन्सूब रेसाला ''अलमुन्तज़र'' सबक़ नं. १ तक़रीबन सभी अहमुन्तज़र मेम्बरान को इरसाल किया था और किया जा रहा है जिसमें एक सवालनामा होता है जिसके जवाब भी उसी सबक़ में मौजूद होते हैं।

जिन हज़रात का पुर करदा सवालनामा हम तक पहुँचा हमने दूसरा सबक़ इरसाल कर दिया। लेकिन जिन हज़रात के जवाब मौसूल नहीं हुए (और अक्सरीयत ऐसे अफ़राद की है) उनकी ख़िदमत में दूसरा सबक़ इरसाल नहीं कर सके। अगर आप इस सिलसिलए दुरूस में वाक़ेअन दिलचस्पी रखते हैं तो हमें बस एक पोस्ट कार्ड से इत्तेला करें हम दूसरा सबक़ इरसाल करने की सआदत हासिल करेंगे। जवाब न मिलने पर येह माना जाएगा कि आप सिलसिलए दुरूस में दिलचस्पी नहीं रखते। अगर एक सबक़ मिलने के बाद आपको दूसरा सबक़ दो महीने के अन्दर मौसूल नहीं हुआ हो तब भी एक ख़त को ज़रीए हमें ज़रूर इत्तेला करें ताकि सिलसिले को जारी रखा जा सके।

येह सिलसिला १८ असबाक़ पर मुश्तमिल है और येह फ़िलहाल उर्दू, हिन्दी और अँग्रेज़ी में मौजूद है। इसके अलावा ख़ुसूसी शुमारे मुहर्रम और शअबान (शाबान) में इरसाल किए जाते हैं।

अक्सर हमें ना मुकम्मल पते मौसूल होते हैं जिस पर हम रेसाला इरसाल नहीं करते। हर एक ख़त-ओ-किताबत में अपना रुक्नियत नम्बर (रिफ़रेन्स नम्बर) ज़रूर लिखें। बेहतर है कि अपना पता अँग्रेजी में लिखें। सिलसिलए दुरूस का कोई ख़ास और मोअय्यन ज़रे इश्तेराक या हदिया नहीं है। आप इस कारे ख़ैर में हस्बे तौफ़ीक़ जो भी रक़म इरसाल फ़र्माएँगे क़ुबूल करली जाएगी। अलबत्ता सिर्फ़ ड्राफ़्ट या मनी आर्डर ही की शक्ल में रवाना फ़र्माएँ। बिलख़ुसूस मनी आर्डर की स्लिप पर अपना नाम, पता और रुक्नियत नम्बर ज़रूर लिखें। आप इस सिलसिले में शरई रुक़ूम भी इरसाल कर सकते हैं।

आइए हम सब मिलकर हज़रत हुज्जत अलैहिस्सलाम के ज़हूर के लिए ज़मीन हमवार करें और उनकी ख़ुशनूदी के असबाब फ़राहम करें ताकि ख़ुदावन्द आलम हम सबको हज़रत हुज्जत अलैहिस्सलाम के ख़ादिमों में शुमार करे। आमीन.

वस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे वबरकातुहू

सफह न. १ का बाकी

जब मोआविया का अ़हद गुज़र गया और यज़ीद तख़्ते हुकूमत पर बैठा तो उस वक़्त सर-बराहाने हुकूमत और मुशीरकाराने यज़ीद के सामने बड़े पेचीदा और गहरी तशवीश के मसाएल सामने थे। इन मसाएल से दो-चार, अफ़राद के ज़ेहन में लशकर कशी यानी फ़ौजी ताक़त का इस्तेमाल बेगुनाह बस्तियों पर जारहाना हम्ले, हक़ गोयों की ज़बान बन्दी, हुकूमत के निज़ाम में दीन का इस्तेहसाल और तलवार की धार पर ईमान-ओ-सदाक़त और तब्लीग़ाते रिसालत मआब की बात करने वालों की खूँरेज़ी के अलावा कोई दूसरा रास्ता न था।

वोह मसाएल क्या थे? उनका कुछ ज़िक्र करके आगे बढ़ेंगे। अव्वल तो येह अह्दे यज़ीदी साठ हिजरी के अवाख़िर से शुरू हुआ यानी रिसालत मआब सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की वफ़ात से अभी सिर्फ़ पचास साल गुज़रे थे। अभी शह्रे मदीना-ए-मुनव्वरा और मक्का-ए-मुकर्रमा में हबीबे ख़ुदा मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की हयाते तय्यबा जिसे हम सीरते नबवी कहते हैं और आप (सल्लल्लाहो अ़लैहै व आलेही व सल्लम) के अहकाम अह्लेबैत से मुताल्लिक़ और आप (सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम) की अहादीस अपने वसी-ओ-जानशीन अ़ली अ़लैहिस्सलाम से वाबस्ता आपके पुर मअ़नी और पुर मग़्ज़ अक़वाल इमाम हसन और इमाम हुसैन अ़लैहिमस्सलाम की मारेफ़त से तअ़ल्लुक़ रखने वाले जो ज़बाने वही से अदा हुए थे, के चर्चे आ़म थे। उनमें अभी तावीलात और मतालिब-ओ-मआ़नी में तग़य्युरात की जद्द-ओ-जेहद शुरू नहीं हुई थी। मिसाल के तौर पर ग़दीरे ख़ुम की वोह ज़बरदस्त तारीख़ का मोड़ जिसमें एलाने ताज पोशिए विलायत-ओ-ख़िलाफ़त की वोह आवाज़ बलन्द हुई थी जो लाख दबाने पर भी दबी नहीं थी और जिसकी एहिया मैदाने रहबा में अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने कर दी थी।

''हुसैन सरदारे जवानाने जन्नत है।'' ''हुसैन मुझ से है और मैं हुसैन से हूँ।'' ''मेरी बेटी फ़ातेमा ज़हरा सलामुल्लाह अ़लैहा ख़ातूने जन्नत है।'' मेरे जिगर का टुकड़ा है जिसने इसको अज़ीयत पहुँचाई उसने मुझे अज़ीयत पहुँचाई। और फिर बादे वफ़ाते नबी ये आख़िरुज़्ज़मान सल्लाल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम तहरीके ख़िलाफ़त मे इसी क़ौल के सामने मासूमए कौनैन के दरवाज़े से आग के शोले भी भड़कते देखे थे। अक़्ल-ओ-फ़िक्र-ओ-शऊर रखने वाले अहालियाने मदीना और जहाँ जहाँ इस्लाम पहुँच चुका था वहाँ के मुसलमानों में अभी भी इन्साफ़ करने की इस्तेअ़दाद ख़त्म नहीं हुई थी। अभी फरज़न्दाने इस्लाम कसरत से थे जो हक़-ओ-बातिल में तमीज़ करते थे और हक़ गोई में जुरअतमंदी से काम लेते थे। अभी मदीना ताराज नहीं हुआ था। अभी ग़लाफ़े काबा नज़्रे आतश नहीं हुआ था।

सितम बालाए सितम सुल्हे हसन की येह शर्त अभी अपनी क़द्र को ज़िन्दा रखे हुए थी कि मोआ़विया के बाद सिर्फ़ बनी हाशिम ही की औलाद सरबराही करेंगी और मर्गे मोआ़विया के बाद कूफ़े और बसरे में और मदीने और अतराफ़ में इतमीनान की साँस ली जा रही थी कि शायद जारहाना हुकूमत का दौर ख़त्म होगा और हमें नूरे चश्मे रसूलुस्सक़लैन इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की क़यादत नसीब होगी। रस्मे बैअ़त अभी तक ज़िन्दा-ओ-ताबिन्दा थी। लेहाज़ा इसी नज़रिये के तहेत बेशुमार ख़ुतूत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के पास आए कि आप तशरीफ़ लाएँ और हम आपके दस्ते मुबारक पर बैअ़त करने के लिए तैयार हैं। ऐसे और भी मसाएल थे जो यज़ीद की हुकूमत के लिए बड़े ख़तरे की निशान देही कर रहे थे। वोह ख़तरात जो हुकूमत के सामने थे जिनका इजमाली ज़िक्र ऊपर किया गया है उसकी नौईयत येह थी कि एक तरफ़ शाम की हुकूमत थी जिसके सरबराह, मुशीरकार और इस्लाम में हुकूमती निज़ाम के क़याम के लिए ओ़लमाए ज़र ख़रीद थे। हुकूमत के लिए मन्सूबा बन्दी की वोह बुनियाद डाल रहे थे जो उनके बनाए क़ानून और शरीअ़ते इस्लामी के इम्तेज़ाज के मसाले से तैयार हो रही थी तो दूसरी तरफ़ कूफ़े से मदीने की तरफ़ आवाज़ें आ रही थीं जो इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम को पुकार रही थीं जो वारिसे रसूले

बाकी सफह न. २८